

शांति और विकास के लिए सबसे गंभीर खतरा है आतंकवाद-राजनाथ सिंह

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि शांति और विकास के लिए आतंकवाद सबसे गंभीर खतरा है। उन्होंने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक में बोलते हुए कहा कि आतंकवाद से न केवल निदोष लोगों की जान जाती है, बल्कि निवेश और व्यापार भी प्रभावित होते हैं। आतंकवाद समाज को कड़ुरपंथ की ओर धकेलता है और युवाओं को उन अवसरों से वंचित करता है, जिनके वे हकदार हैं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ताजिकिस्तानी की राजधानी दुशामे में शंघाई सहयोग संगठन की शासनाध्यक्ष परिषद की बैठक को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने स्पष्ट कहा कि आतंकवाद को किसी भी परिस्थिति में सही नहीं ठहराया जा सकता। इससे निपटने में दोहरे मापदंड नहीं अपनाए जा सकते। आतंकवादियों को आर्थिक

मदद देने, उनका समर्थन करने या उन्हें सुरक्षित ठिकाने उपलब्ध कराने वालों के लिए भी कोई जगह नहीं होनी चाहिए। उन्होंने जोर दिया कि आतंकवाद के पूरे तंत्र को मजबूती और सामूहिक प्रयासों से समाप्त किया जाना चाहिए। रक्षा मंत्री ने कहा कि बिश्केक में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन में नेताओं ने संगठन की 25 वर्षों की यात्रा की समीक्षा की थी।

यह अवसर अब तक की उपलब्धियों पर विचार करने के साथ-साथ भविष्य की दिशा तय करने का भी था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उस सम्मेलन में संगठन से सुरक्षा, संपर्क और अवसर के क्षेत्रों में ठोस कदम उठाने का आह्वान किया था। राजनाथ सिंह ने कहा कि ये तीनों स्तंभ एक-दूसरे को मजबूत बनाते हैं। सुरक्षा से निवेश के अवसर पैदा होते हैं, संपर्क से



व्यापार को बढ़ावा मिलता है और इन दोनों के माध्यम से लोगों के लिए नए अवसर तैयार होते हैं। उन्होंने कहा कि भारत ऐसा शंघाई सहयोग संगठन चाहता है जो सदस्य देशों के बीच सहमति से काम करे और ठोस परिणाम दे। भारत इस उद्देश्य को पूरा करने के

लिए सभी सदस्य देशों के साथ मिलकर काम करता रहेगा। उन्होंने कहा कि भारत ताशकंद में सार्वभौमिक केंद्र और दुशामे में मादक पदार्थ विरोधी केंद्र को शंघाई सहयोग संगठन की स्थायी संस्थाएं बनाने के बिश्केक में लिए गए फैसलों का स्वागत करता है। उन्होंने कहा

कि इन संस्थाओं की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे आपस में कितना अच्छे तालमेल बनाती हैं और कितनी तेजी से अपने कार्यों को पूरा करती हैं। क्षेत्रीय सुरक्षा की चुनौतियों से निपटने के लिए सदस्य देशों के बीच बेहतर समन्वय और प्रभावी कार्रवाई आवश्यक है। रक्षा मंत्री ने आर्थिक सहयोग को लेकर भारत का दृष्टिकोण रखते हुए कहा कि सदस्य देशों के बीच आर्थिक भागीदारी समावेशी होनी चाहिए और इससे प्रत्येक देश को लाभ मिलना चाहिए।

उन्होंने कहा कि सभी देशों को अधिक मजबूत और संकटों का सामना करने में सक्षम आपूर्ति श्रृंखलाएं बनाने, व्यापार और निवेश को आसान बनाने तथा विकास के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की दिशा में काम करना चाहिए। राजनाथ सिंह ने इस बात पर भी जोर दिया कि आर्थिक सहयोग का लाभ

समाज के सभी वर्गों तक पहुंचना चाहिए। भारत वर्ष 2026 से 2030 की अवधि के लिए बहुपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम की कार्ययोजना को अपनाने का समर्थन करता है। उन्होंने कहा कि आर्थिक प्रगति का उद्देश्य केवल व्यापार बढ़ाना नहीं, बल्कि उसके लाभ को व्यापक स्तर पर लोगों तक पहुंचाना भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि साझा समृद्धि के लिए संपर्क व्यवस्था भी उत्तरी ही महत्वपूर्ण है।

भारत ऐसी संपर्क परियोजनाओं का समर्थन करता है, जो बाजारों को जोड़ें, व्यापार को आसान बनाएं और विकास के नए अवसर पैदा करें। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारों और चाबहार बंदरगाह जैसी परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि ये पहल मध्य एशिया को व्यापक बाजारों से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

‘इतना दुख कभी नहीं हुआ’, अमित शाह बोले- भगवंत मान सरकार पंजाब में नशे की समस्या को रोकने में फेल



चंडीगढ़। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह मंगलवार को पंजाब में नशे की समस्या से जुड़ी घटनाओं में जान गंवाने वालों के परिजनों से मिले। शाह ने कहा कि परिजनों से मिलते समय उन्हें जितना गहरा दुःख महसूस हुआ, उतना जीवन में पहले कभी नहीं हुआ था। शाह ने पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि वह नशे की समस्या को रोकने में फेल रही है और पंजाब में मादक पदार्थों का धंधा बढ़ता जा रहा है। शाह ने कहा कि चिट्ठे के काले कारोबार के खिलाफ आम आदमी पार्टी की सरकार ने आंखें मूंद ली हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में हमारी सरकार बनते ही इन चिट्ठे कारोबारियों की उल्टी गिनती शुरू हो जाएगी और पंजाब इस काले कारोबार से पूरी तरह मुक्त होगा। अमित शाह गुरदासपुर, संगरूर और मानसा पहुंचे। इस दौरान वह पंजाब में नशे की समस्या से जुड़ी घटनाओं में जान गंवाने वालों के परिजनों से मिले। अमित शाह ने कहा कि ‘आपदा’ सरकार के दौर में युवा नशे की चपेट में आ रहे हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि जो लोग इसके खिलाफ आवाज उठाते हैं, वे सुरक्षित नहीं हैं। पंजाब में तीन जगहों का दौरा करने के बाद शाह ने लुधियाना में पत्रकारों से बात की। उन्होंने लोगों को एक बार सुरक्षित, मोबाइल-अनुकूल और दिव्यांगजनों के लिए सुलभ बनाने पर जोर दिया गया है।

आयोजित ‘रावण दहन’ कार्यक्रम में भी शामिल हुए। इससे पहले उन्होंने – पर पंजाबी में एक पोस्ट में कहा, आज मैंने गुरदासपुर में दिवंगत विक्रमजीत सिंह के परिवार से उनके आवास पर मुलाकात की और उनके निधन पर अपनी संवेदना व्यक्त की। शाह ने कहा कि पंजाब में ‘आपदा’ सरकार के दौर में विक्रमजीत ने वहां बड़े पैमाने पर चल रहे नशे के कारोबार के खिलाफ आवाज उठाई, जिसके कारण उनकी जान चली गई। पंजाब में नशे के कारोबार को इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि उसने अपने इलाके में मादक पदार्थों की तस्करी का विरोध किया था लेकिन पुलिस का कहना है कि यह हत्या एक मोबाइल फोन को लेकर दो गुटों के बीच हुई हाथापाई की वजह से हुई थी। अमित शाह संगरूर में गुलजार सिंह और मानसा में परिवर्द्ध सिंह झोटा के परिवार से भी मिले। शाह ने कहा कि नशे के कारोबार के खिलाफ संघर्ष करने वाले गुलजार सिंह पर इतना दबाव बनाया गया कि उन्होंने आत्महत्या कर ली।

लॉरेंस गैंग से पुलिस को भी डर टाइगर श्रॉफ केस के आरोपियों को वापस कोटा ले गए

नई दिल्ली। टाइगर श्रॉफ पर फायरिंग के मामले में गिरफ्तार तीन आरोपियों को मुंबई ले जा रही पुलिस टीम को सुरक्षा संबंधी आशंकाओं के चलते वापस कोटा लौटना पड़ा। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, टीम को शक हुआ कि कुछ लोग उसका पीछा कर रहे हैं। इसके बाद पुलिसकर्मী पहले एक थाने में रुके और फिर रात बिताने के लिए कोटा लौट गए। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, सुरक्षा इंतजामों से संतुष्ट होने के बाद टीम दोबारा मुंबई के लिए रवाना होगी। इसके लिए राजस्थान पुलिस की एस्कॉर्ट टीम की मदद भी ली जा सकती है। इन आरोपियों का लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़े होने का शक है। टाइगर श्रॉफ पर फायरिंग के मामले में मुंबई पुलिस को सोमवार सुबह बड़ी सफलता मिली थी। मुंबई पुलिस से मिली सूचना के आधार पर की गई संयुक्त कार्रवाई में तीनों आरोपियों को राजस्थान के कोटा में पुणे-जयपुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस से गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार, फायरिंग की घटना के कुछ घंटे बाद ही आरोपी मुंबई से फरार हो गए थे। उनकी योजना पहले दिल्ली और फिर नेपाल जानने की थी। मुंबई पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों की पहचान फूल सिंह (18), ऋतिक महतो (22) और रेहान रहीसुद्दीन (18) के रूप में की है। कोटा में गिरफ्तार आरोपियों को अदालत में पेश किए जाने के बाद मुंबई पुलिस उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए रवाना हुई थी। कोटा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुभाष चंद्र मिश्रा ने बताया कि आरोपियों को मुंबई पुलिस के हवाले कर दिया गया था। मुंबई पुलिस ने ट्रांजिट रिमांड हासिल की और आरोपियों की मेडिकल जांच भी कराई। स्थानीय अदालत ने मुंबई पुलिस को आरोपियों की दो दिन की हिरासत दी थी। इंडियन एक्सप्रेस ने सूत्रों के हवाले से लिखा है कि मुंबई पुलिस की टीम शाम को आरोपियों को लेकर कोटा से निकली थी।

राहुल गांधी 4 दिन के लिए वियतनाम रवाना, इंडिया गठबंधन के प्रदर्शनों पर लगा ब्रेक; भाजपा का तंज

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी चार दिन के दौरे पर वियतनाम रवाना हो गए हैं। उनका यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है, जब त्योहारों के सप्ताह को देखते हुए विपक्षी इंडिया गठबंधन ने दिल्ली में अपने विरोध प्रदर्शन के कार्यक्रम को फिलहाल रोक दिया है। पिछले दो सप्ताह से राहुल गांधी राजधानी में विपक्षी प्रदर्शनों का नेतृत्व कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने चुनाव प्रक्रिया में कथित गड़बड़ियों और वोट चोरी के आरोपों को लेकर केंद्र सरकार तथा चुनाव आयोग पर निशाना साधा था। पार्टी नेताओं के मुताबिक, राहुल गांधी चार दिनों तक विदेश में रहेंगे। इससे पहले वह रविवार को गोवा में कांग्रेस की ‘गॉय रक्षण यात्रा’ में शामिल हुए थे। गोवा में पार्टी के कार्यक्रम में भाग लेने के बाद उनके वियतनाम रवाना होने की जानकारी सामने आई है।

राहुल गांधी की विदेश यात्रा पर भाजपा नेता शांजिया इक्मी ने तंज कसा है। उन्होंने कहा, राहुल गांधी से अब और बदरंग हो रहा। आखिर वे कितनी मेहनत कर सकते हैं वोट चोरी का मुद्दा तो बस एक बहाना है। सब जानते हैं कि वे कितने आलसी हैं। अब उनका पर्यटन फिर से शुरू हो गया है। हम देख सकते हैं कि वे दो हफ्ते भी काम नहीं कर पाए और फिर से निकल पड़े। इस बार वे वियतनाम की यात्रा पर गए हैं। वहीं भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा, राहुल गांधी ऐसा पक्षी बार नहीं कर रहे हैं। वे अक्सर विदेश यात्राओं में ही ज्यादा समय बिताते हैं। उनका बस यही काम है कि भारत आएँ, किसी मुद्दे पर विवाद खड़ा करें और फिर विदेश यात्रा पर निकल जाएँ। वे विदेश में कहा जाते हैं और किससे मिलते हैं? यह किसी को समझ नहीं आता और न ही किसी को पता है। राहुल गांधी को देश को बचाना चाहिए कि पिछले दो-तीन सालों में उन्होंने कहा-कहां की विदेश यात्राएं की

एक और देश के साथ फी ट्रेड डील लागू भारतीय उत्पादों को मिलेगी टैक्स फ्री एंट्री

नई दिल्ली। भारत और न्यूजीलैंड के बीच मुक्त व्यापार समझौता यानी फ्री ट्रेड एग्रीमेंट मंगलवार से लागू हो गया। इससे भारत को भी कई फायदे होंगे। कपड़ा, चमड़ा और जूते-चप्पल जैसे क्षेत्रों में मादक पदार्थों के निर्यात को बढ़ने में मदद मिलेगी। उन्होंने आगे कहा कि इस समझौते से न्यूजीलैंड के कारोबारियों को एक अरब से अधिक नए ग्राहकों तक पहुंचने का मौका मिलेगा और काफी कम शुल्क देना होगा। इससे रोजगार के मौके भी बढ़ेंगे। इससे पहले दोनों देशों ने इस समझौते पर 27 अप्रैल, 2026 को हस्ताक्षर किए थे। इसके लिए बातचीत 2010 में शुरू हुई थी, लेकिन 2015 में वार्ता रुक गई थी। मार्च, 2025 में दोनों देशों ने तात्वीत फिर शुरू की, जिसके बाद समझौते को अंतिम रूप दिया गया। विशेषज्ञों के मुताबिक इस समझौते से कपड़ा और परिधान, चमड़ा और जूते-चप्पल, इंजीनियरिंग उत्पाद, वाहनों के कलपुर्ज, रब और आभूषण, कृषि और खाद्य उत्पाद, औषधि और अन्य विनिर्माण क्षेत्रों को लाभ मिलने की उम्मीद है। इससे भारतीय निर्यातकों को न्यूजीलैंड के बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिल सकती है।

समझौते के तहत भारत से निर्यात की सभी शुल्क श्रेणियों को पहले दिन से टैक्स फ्री पहुंच दी गई है। न्यूजीलैंड के पीएम ने समझौते को ऐतिहासिक बताया है। बता दें कि यह पिछले पांच साल में लागू होने वाला यह भारत का सातवां व्यापार समझौता है। इससे पहले भारत ने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), मॉरीशस, यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ, ब्रिटेन, ओमान और ऑस्ट्रेलिया के साथ व्यापार समझौते लागू किए हैं। भारत और न्यूजीलैंड के बीच समझौता लागू होने के साथ ही देश के प्रभावी मुक्त व्यापार समझौतों की संख्या बढ़कर 17 हो गई है। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सेन ने FTA की घोषणा खुद की। पीएम लक्सेन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, आज से भारत के

साथ हमारा ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौता लागू हो गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मिलकर काम करते हुए हमने ऐसा समझौता किया है, जिससे दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ने में मदद मिलेगी। उन्होंने आगे कहा कि इस समझौते से न्यूजीलैंड के कारोबारियों को एक अरब से अधिक नए ग्राहकों तक पहुंचने का मौका मिलेगा और काफी कम शुल्क देना होगा। इससे रोजगार के मौके भी बढ़ेंगे। इससे पहले दोनों देशों ने इस समझौते पर 27 अप्रैल, 2026 को हस्ताक्षर किए थे। इसके लिए बातचीत 2010 में शुरू हुई थी, लेकिन 2015 में वार्ता रुक गई थी। मार्च, 2025 में दोनों देशों ने तात्वीत फिर शुरू की, जिसके बाद समझौते को अंतिम रूप दिया गया। विशेषज्ञों के मुताबिक इस समझौते से कपड़ा और परिधान, चमड़ा और जूते-चप्पल, इंजीनियरिंग उत्पाद, वाहनों के कलपुर्ज, रब और आभूषण, कृषि और खाद्य उत्पाद, औषधि और अन्य विनिर्माण क्षेत्रों को लाभ मिलने की उम्मीद है। इससे भारतीय निर्यातकों को न्यूजीलैंड के बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिल सकती है।

पुलिस स्मृति दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि देंगे अमित शाह ‘इग्गस के खिलाफ लड़ाई’ के संदेश के साथ निकलेगी देशव्यापी मोटरसाइकिल रैली

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह बुधवार, 21 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर शहीद पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस अवसर पर वह ‘इग्गस के खिलाफ लड़ाई’ के संदेश के साथ आयोजित देशव्यापी मोटरसाइकिल रैली को झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। इस रैली में देशभर के राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और केंद्रीय बलों के मोटरसाइकिल सवार भाग लेंगे। रैली के प्रतिभागी गुजरात के एकता नगर पहुंचकर एकता परेड-2026 में शामिल होंगे। पुलिस स्मृति दिवस हर साल 21 अक्टूबर को उन पुलिसकर्मियों के बलिदान की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने देश की सुरक्षा और सेवा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। 21 अक्टूबर 1959 को लद्दाख के हॉट स्प्रिंग क्षेत्र में सशस्त्र चीनी टुकड़ी के घात लगाकर किए गए हमले में पुलिस के 10 जवान शहीद हो गए थे। इन वीर जवानों की स्मृति में यह दिवस मने की परंपरा शुरू हुई। इस दिन देशभर में शहीद पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि दी जाती है



और राष्ट्रीय सुरक्षा तथा एकता बनाए रखने में पुलिस बलों की भूमिका को याद किया जाता है। गृह मंत्री अमित शाह राष्ट्रीय पुलिस स्मारक से मोटरसाइकिल रैली को हरी झंडी दिखाएंगे।

इसमें जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली सहित विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के करीब 90 मोटरसाइकिल सवार भाग लेंगे। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में सीआरपीएफ, सीआईएसएफ, बीएसएफ, एसएसबी, आईटीबीपी और एनएसएल की जवान भी रैली में शामिल होंगे। इसके अलावा रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ), राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के प्रतिनिधि भी हिस्सा लेंगे। यह मोटरसाइकिल रैली देशव्यापी अभियान का हिस्सा है।

इसके तहत देशभर के राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और केंद्रीय बलों के मोटरसाइकिल सवार गुजरात के एकता नगर पहुंचेंगे और एकता परेड-2026 में शामिल होंगे। रैली के माध्यम से नशे के खिलाफ जागरूकता फैलाने, राष्ट्रीय एकता का संदेश देने और समाज को नशामुक्त बनाने के प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाएगा। पुलिसकर्मियों के बलिदान को चिरस्थायी बनाने और राष्ट्रीय सुरक्षा में उनके योगदान का सम्मान करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पुलिस स्मृति दिवस, 2018 के अवसर पर चाणक्यपुरी, नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय पुलिस स्मारक को राख को समर्पित किया था। यह स्मारक पुलिस बलों की वीरता, कर्तव्यनिष्ठा और निर्यात सेवा का प्रतीक है। इसका उद्देश्य पुलिसकर्मियों में राष्ट्रीय पहचान, गर्व, साझा इतिहास और देश की रक्षा के प्रति प्रतिबद्धता की भावना को मजबूत करना है।

राष्ट्रीय पुलिस स्मारक में केंद्रीय शिल्पकृति, शौर्य की दीवार और एक संहालय मौजूद है। स्मारक की प्रमुख केंद्रीय शिल्पकृति 30 फुट ऊंचे त्रिनाइट के एकल पाषाण खंड से बनी है।

टीएमसी छोड़ने वाले यूसुफ पटान पर सरकार मेहरबान, करोड़ों की जमीन गिफ्ट दे दी

नई दिल्ली। लोकसभा सांसद यूसुफ पटान को बड़ा फायदा हुआ है। खबर है कि करोड़ों की कीमत वाले जिस प्लॉट को लेकर लंबे समय से विवाद जारी था, उसे गुजरात सरकार ने यूसुफ पटान को गिफ्ट कर दिया है। वहीं, एक बड़ा हिस्सा रियायती दारों पर भी देने की व्यवस्था की जा रही है। खास बात है कि हाल ही में पूर्व क्रिकेटर ने तुलामूल कांग्रेस से अलग होकर बागी गुट के साथ NCPI यानी नेशनलिस्ट सिटिजनस पार्टी ऑफ इंडिया में विलय कर लिया था। फिलहाल, VMC यानी वडोदरा नगर निगम की तरफ से प्लॉट के आवंटन को लेकर प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है। इसे स्थायी समिति में भेजा गया है, जहां से अंतिम फैसला लिया जाना है। दरअसल, गुजरात सरकार की तरफ से आदेश दिया गया था, जिसमें पटान को जमीन आवंटित करने की बात कही गई थी। इसके आधार पर ही वीएमसी ने अपना प्रस्ताव तैयार किया है। यह पूरा मामला 978 वर्ग मीटर प्लॉट का है। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, सरकार के आदेश में कहा गया है कि 500 वर्ग मीटर को पटान को गिफ्ट किया जाएगा। वहीं, 478 वर्ग मीटर जमीन को 55 फीसदी की रियायती दर पर दिया जाएगा। हालांकि, आदेश में यह भी कहा गया है इस मामले को नजीर की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। वहीं, गुजरात का राजस्व विभाग इसके बराबर कीमत की जमीन VMC को देगा। रिपोर्ट के अनुसार, टाउन प्लानिंग स्क्रीम 22, फाइनल प्लॉट नंबर 90 के तहत यह प्लॉट तंदलजा में है। इसके पास ही पटान परिवार का घर है। जुलाई में ही वीएमसी की स्थायी समिति ने इस प्लॉट की नीलामी की तैयारी की थी, जिसकी दर 2.10 लाख रुपये प्रति वर्ग मीटर आई थी। इस लिहाज से प्लॉट की अनुमानित कीमत 20.5 करोड़ रुपये हो जाती है। हालांकि, पटान की तरफ से कथित रूप से अतिक्रमण की बात सामने आने के बाद नीलामी को रोक दिया गया था। तब कहा गया था कि मामला सुलझने तक प्लॉट मामले को खत्म नहीं किया जा सकता है।

राष्ट्रपति मुर्मु और उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन ने सभी भारतीयों को दी विजयादशमी की शुभकामनाएं

नई दिल्ली। राष्ट्रपति की ओर से उनके कार्यालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, विजयादशमी के शुभ अवसर पर, देश-विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को मैं हार्दिक बधाई देती हूं। प्रभु श्रीराम की रावण पर विजय के उपलक्ष्य में मनाए जाने वाले इस पर्व का विशेष महत्व है। प्रभु श्रीराम को धर्म और नैतिक आचरण का साक्षात स्वरूप माना गया है। यह त्योहार अधर्म और अन्याय पर धर्म और न्याय की विजय का उत्सव है। राष्ट्रपति की ओर से आगे लिखा गया, भारतीय संस्कृति, नैतिकता और कल्याण के आदर्शों पर आधारित है। प्रभु श्रीराम की विजय के इस त्योहार के दिन, सभी देशवासी यह संकल्प लें कि अपनी विरासत के उच्च आदर्शों पर चलते हुए विकसित भारत



एवं समावेशी समाज के निर्माण में अपना योगदान देंगे। इस पावन विजयादशमी की बधाई देते हुए लिखा गया, दशहरा और विजयादशमी के पावन अवसर पर, मैं सभी देशवासियों और दुनिया भर में बसे

और से उनके कार्यालय के आधिकारिक एक्स हैंडल पर विजयादशमी की बधाई देते हुए लिखा गया, दशहरा और विजयादशमी के पावन अवसर पर, मैं सभी देशवासियों और दुनिया भर में बसे

भारतीयों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। उपराष्ट्रपति के कार्यालय के ऑफिशियल एक्स हैंडल से आगे लिखा गया, पूरे देश में अलग-अलग रूपों में, पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाए जाने वाले ये त्योहार भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, साझा सभ्यतामत्त मूल्यों और ‘विविधता में एकता’ की स्थायी भावना को दर्शाते हैं।

उपराष्ट्रपति की ओर से लिखा गया, ये हमें बुराई पर अच्छाई की शायत जीत की याद दिलाते हैं और संघ, धर्म तथा न्याय में हमारे विश्वास को और सुदृढ़ करते हैं। ये त्योहार हमारे बीच सद्भाव और भाईचारे के बंधन को मजबूत करें, और हमें एक शांतिपूर्ण, समृद्ध तथा समावेशी भारत के निर्माण की दिशा में मिलकर काम करने के लिए प्रेरित करें।

भारत की बिरिकट पर नेपाल ने लगा दिया बैन, जानवरों का चारा मिलने से मवा है हड़कंप

नई दिल्ली। भारत में बेहद प्रसिद्ध बिरिकट के एक ब्रांड में जानवरों का चारा मिलने की खबर से हड़कंप मच गया है। देशभर में इसे लेकर हो रहे बवाल के बाद अब नेपाल ने भी बड़ा एक्शन लिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक नेपाल ने भारत की कंपनी सूर्या फूड एंड एगो लिमिटेड द्वारा बनाए जाने वाले प्रियामोड बिरिकट के आयात, बिक्री और वितरण पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है। नेपाल के खाद्य प्रौद्योगिकी और गुणवत्ता नियंत्रण विभाग ने सोमवार को इस मामले में एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया है। नोटिस में नेपाली सरकार ने इन बिरिकटों को सब-स्टैंडर्ड यानी घटिया गुणवत्ता का करार दिया है। साथ से बाजार से तुरंत इसे हटाने के निर्देश दिए गए हैं। दरअसल नेपाल ने भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण की हालिया कार्रवाई और चेतावनी के आधार पर यह फैसला लिया है। इससे पहले FSSAI ने हाल ही में कंपनी की जांच के दौरान पाया कि प्रियामोल्ड बिरिकट बनाने में केवल फीड ब्रेन यानी मवेशियों को खिलाया जाने वाला भूसा या चोकर का इस्तेमाल किया जा रहा था। FSSAI ने कहा है कि यह खाद्य सुरक्षा नियमों का बेहद गंभीर उल्लंघन है। गड़बड़ियों को देखते हुए FSSAI ने न केवल सूर्या फूड एंड एगो का लाइसेंस निलंबित कर दिया है, बल्कि कंपनी के खिलाफ कानूनी कार्यवाही भी शुरू कर दी है। इसके बाद नेपाली खाद्य विभाग के महानिदेशक संजीव कुमार कर्ण की पहल पर एक आपातकालीन बैठक बुलाई गई और उम्पेक्ताओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यह बैन लगाने का फैसला लिया गया। मिंट की एक रिपोर्ट के मुताबिक नेपाल सरकार ने सभी इंपोर्टर्स और व्यापारियों से कहा है कि अगर बाजार या गोदामों में प्रियामोल्ड बिरिकट का कोई भी स्टॉक मौजूद है, तो उसे तुरंत वापस मंगाया जाए। वहीं विभाग ने व्यापारियों, दुकानदारों और आम लोगों से स्पष्ट अपील की है कि वे इस बिरिकट का आयात ना करें और ना ही इसे खरीदे या बेचें।

संपादकीय

(उमेश कुमार तिवारी)

सुधारों को तेजी से लागू करके ही भारत बनेगा समृद्ध

विकसित भारत 2047 का लक्ष्य भारत के सामने एक बड़ा सार्वजनिक सपना है। आजादी के बाद के दशकों में भारत ने अपना ध्यान काफी हद तक नियंत्रित और सतर्क अर्थव्यवस्था पर रखा, जबकि दक्षिण कोरिया और सिंगापुर जैसे देशों ने तेजी से औद्योगिकीकरण करके अपनी आय में बड़ा झुाफा किया। 199१ के सुधारों ने भारत की दिशा बदली, पर जमीन की व्यवस्था, अदालती फैसलों और उद्योगों में रोजगार की कमी की वजह से हम दूसरे देशों से पीछे रह गए। अब आने वाले समय में भारत के पास इस अंतर को पाटने का एक शानदार मौका है। बीते कुछ सालों में देश के बुनियादी ढांचे में काफी प्रगति हुई है। सरकार ने सड़क, रेल, बिजली और इंटरनेट जैसे बुनियादी ढांचे में काफी पैसा लगाया है। बजट में इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए लगातार बड़ा हिस्सा दिया जा रहा है। डिजिटल पेमेंट्स और सरसे इंटरनेट ने आम लोगों को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ा है। ये तमाम बातें निवेशकों को आकर्षित करती हैं और विकास का एक पक्का आधार तैयार करती हैं। लेकिन सड़क और इंटरनेट होना ही काफी नहीं है, असली काम इनका इस्तेमाल करके बेहतर कारखाने और रोजगार बनाना है। किसी भी कारखाने को लगाने में आने वाली देरी सबसे बड़ी रुकावट है। जमीन की खरीद, पर्यावरण की मंजूरी और बिजली का कनेक्शन मिलने में महीनों लग जाते हैं। अलग-अलग राज्यों में इसका समय अलग होता है। निवेशक किसी राज्य के वादे से ज्यादा वहां की आसान प्रक्रिया को देखते हैं। भारत की प्रशासनिक व्यवस्था में अलग-अलग विभाग हैं और सभी जगह से वलीयरेंस लेने में देरी होती है। नई सड़क या बांध का उद्घाटन करना नेताओं के लिए आसान और दिखने वाला काम है, लेकिन जमीन के विवाद सुलझाना और कानूनी प्रक्रिया को आसान बनाना ज्यादा कठ लेता है। जमीन का मामला सबसे पेचीदा है। गलत या पुराने रिकार्ड होने से जमीन के विवाद बढ़ते हैं, जिससे औद्योगिक विकास रुका रहता है। इसी तरह मजदूर कानून को आसान बनाने की जरूरत है ताकि कंपनियां ज्यादा से ज्यादा लोगों को पक्की नौकरी दे सकें। सिर्फ नई सड़कें और पुल बनाने से बात नहीं बनेगी। हमारे पास पड़े-लिखे, कुशल और स्वस्थ वर्कर भी होने चाहिए। शिक्षा, स्वास्थ्य और स्किल ट्रेनिंग पर ध्यान देना उतना ही जरूरी है जितना क्रीेट के ढांचे पर खर्चा करना। हर साल भारत में लगभग एक करोड़ से ज्यादा युवा रोजगार की तलाश में आते हैं। सभी को सरकारी नौकरी या आईटी क्षेत्र में जगह नहीं मिल सकती। इसके लिए मैन्यूफैक्चरिंग, टूरिज्म, लॉजिस्टिक्स और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों को आगे आना होगा। छोटे उद्योगों को बड़ा बनने के लिए मदद चाहिए। दक्षिण कोरिया ने पढ़ाई, नई तकनीक और निर्यात पर ध्यान देकर तरक्की की थी। भारत को भी आने वाले दो दशकों में इसी आधार पर काम करना होगा। अगर हम सुधारों को सही ढंग से लागू कर सकें, तो 2047 तक भारत सच में एक विकसित और समृद्ध देश बन सकता है।

सबको बेहतर अवसर मुहैया कराना-आय बढ़ाना है चुनौती

विकसित भारत 2047 का संकल्प पिछले 12 वर्षों की उपलब्धियों से और मजबूत हुआ है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने जन-कल्याण, बुनियादी ढांचे और डिजिटल सेवाओं को विकास की एक साझा दिशा दी है। करोड़ों नागरिकों तक सीधी सुविधाएं पहुंचने से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है और अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी मजबूत हुई है। यही आधार हर परिवार की आय और जीवन-स्तर को बेहतर बनाने के अगले चरण को गति देगा। विश्व बैंक के 2025 के आकलन के अनुसार, भारत को 2047 तक उच्च आय वाला देश बनने के लिए औसतन 7.8 प्रतिशत की वार्षिक आर्थिक वृद्धि दर हासिल करनी होगी। बेहतर कनेक्टिविटी और डिजिटल सुविधाएं उद्योगों व सेवा क्षेत्र को नई रफ्तार दे सकती हैं, जबकि व्यावहारिक प्रशिक्षण, सुरक्षित परिवहन और बाल-देखभाल की सुविधाएं युवाओं और महिलाओं के लिए रोजगार के नए अवसर खोलेंगी। इन अवसरों का पूरा लाभ उठाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक सही दिशा दिखाती है। बच्चों में पढ़ने, लिखने और गणित की बुनियादी क्षमता सुधारने के साथ-साथ शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान देना आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई का प्रशिक्षण छोटे शहरों तक पहुंचे और इसे उद्योग की व्यावहारिक जरूरतों से जोड़ा जाए। इसके अलावा, बेहतर पोषण और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार नागरिकों की कार्यक्षमता और जीवन-स्तर को बेहतर बनाएगा। छोटे और मध्यम उद्योगों की तरक्की इस विकास यात्रा को सर्वव्यापी बनाएगी, जहां डिजिटल भुगतान के साथ-साथ समय पर भुगतान, सरता कर्ज और सरल नियम मिलने से देश में नए रोजगार पैदा होंगे। मुक्त व्यापार समझौतों का लाभ उठाने के लिए एक समर्पित मिशन बनाना जाना चाहिए, जो नए निर्यातकों को गुणवत्ता मानक समझने, आवश्यक प्रमाणपत्र हासिल करने और अंतरराष्ट्रीय बाजार में नए ग्राहक खोजने में मदद करे। जिलों की निर्यात योजनाओं से जुड़ा यह प्रयास स्थानीय व्यापार को वैश्विक पहचान दिलाएगा। स्थानीय कारोबार के मजबूत होने से ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि आएगी। फसलों के बेहतर ध्यान रखवस्था, खाद्य प्रसंस्करण और मंडियों तक सीधी पहुंच से किसानों की आय बढ़ेगी।

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट नहीं बनेगा नेताओं का अखाड़ा

देश के सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया है कि वह राजनीतिक दलों की सत्ता को लेकर चल रही मारामारी के बीच अखाड़ा नहीं बनेगा। सुप्रीम कोर्ट सिर्फ कायदे कानून और संविधान के दायरे में रह कर ही काम करेगा। दरअसल यह संदेश सुप्रीम कोर्ट ने कांग्रेस के जरिए तमाम राजनीतिक दलों को दिया, जोकि सुप्रीम कोर्ट के जरिए राजनीतिक फायदा उठाने का प्रयास कर रहे हैं। यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट के बारे में कोई गलतफहमी या अफवाह पहले, इससे पहले ही मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत ने अप्रत्याशित कदम उठाते हुए पत्रकार वार्ता आयोजित की। सीजेआई ने यह कदम इसलिए उठाया कि नेता कहीं बात का बतंगड़ नहीं बना दे और उसमें सुप्रीम कोर्ट को इसमें नहीं घसीट लें। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधान न्यायाधीश को पत्र लिखकर मुलाकात का समय मांगा था कि वे उन्हें एक ज्ञापन सौंपना चाहते थे, जिसमें वोट चोरी रोकने, मुख्य निर्वाचन आ्युक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे, मतदाता सूची के एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) को रोकने और पुन मतपत्र प्रणाली पर लौटने की मांग की गई थी। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने यह मांग यह कहते हुए ठुकरा दी, कि यदि सुनवाई चाहते हो तो रिट याचिका दायर करो। सीजेआई ने राहुल गांधी के आधिकारिक ईमेल के जवाब में कहा कि इस तरह की मुलाकात उचित नहीं होगी, क्योंकि जिन मुद्दों पर चर्चा की मांग की गई है, वे पहले से ही सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन हैं। इसी के साथ सीजेआई ने दूरदर्शिता अपनाते हुए अगले ही दिन प्रेस कॉफ़ेंस करके स्थिति स्पष्ट कर दी, ताकि राजनीतिक



दल उसकी बातों का गलत मतलब नहीं निकाल पाएं और सुप्रीम कोर्ट को राजनीतिक विवाद में नहीं घसीट सकें। सीजेआई सूर्यकांत ने यह भी स्पष्ट किया कि संवैधानिक व्यवस्था के तहत सुप्रीम कोर्ट, प्रशासनिक स्तर पर सरकार के कामकाज में दखल नहीं दे सकता, हालांकि नेताओं को अपने मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायिक पक्ष में अदालत का दरवाजा खटखटाने की छूट है। सुप्रीम कोर्ट के इतिहास में एक दो बार ही ऐसा हुआ है, जब सुप्रीम कोर्ट के इतिहास में जजों द्वारा मीडिया से सीधे संवाद करने या प्रेस कॉन्फ़ेंस करने का सबसे चर्चित मौका 12 जनवरी 2018 को आया था। सुप्रीम कोर्ट के चार वरिष्ठ न्यायाधीशों—जस्टिस जे. चेलामेश्वर, जस्टिस रंजन गोंगोई, जस्टिस मदन बी. लोकूर और जस्टिस कुरियन जोसेफ ने

एक ऐतिहासिक प्रेस कॉन्फ़ेंस की थी। भारतीय न्यायिक इतिहास में यह पहला अवसर था जब वर्तमान जजों ने इस तरह मीडिया को संबोधित किया था। इन जजों ने तब के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) दीपक मिश्रा के खिलाफ रोस्टर और प्रशासनिक कामकाज को लेकर सार्वजनिक सवाल उठाए थे। इसके अलावा, सुप्रीम कोर्ट अपनी अधिकांश जानकारी और फैसले आधिकारिक प्रेस विज्ञप्तियों अपनी वेबसाइट और सुनवाई के जरिए ही साझा करता है। हाल के दौर में अदालत ने न्यायिक कार्यवाही के लाइव-स्ट्रीमिंग और उसके डिजिटल विलप्स के कमर्शियल इस्तेमाल को लेकर भी कड़े नियम तय किए हैं। सीजेआई सूर्यकांत ने मीडिया के सामने स्पष्ट किया था कि मुझे कल बैठक के अनुरोध के संबंध में एक पत्र मिला था। मैंने कल रात ही उसका जवाब दे दिया था, जिसमें उन कारणों का उल्लेख किया गया था कि मैं क्यों नहीं मिल पाऊंगा सीोजी ने आगे कहा, सुप्रीम कोर्ट के

कानूनों के दुरुपयोग से उपजा संकट

पिछले दिनों वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जीएसटी कानून के दुरुपयोग एवं उनकी जटिलताओं से परेशान कारोबारियों को बड़ी राहत दी। नई व्यवस्था के अनुसार अब जीएसटी अधिकारी कारोबारियों को जीएसटी कानूनों का हवाला देकर गिरफ्तार नहीं कर सकेंगे और इसके लिए उन्हें कोर्ट से आदेश लेना होगा। इसमें संदेह नहीं कि देश में जीएसटी कानूनों का दुरुपयोग हुआ है, लेकिन यह दुरुपयोग केवल जीएसटी कानून या किसी एक कानून तक सीमित नहीं रहा है और यह भी आवश्यक नहीं है कि दुरुपयोग अधिकारियों द्वारा ही किया गया हो, जनता द्वारा कानूनों के दुरुपयोग के मामले भी प्रायः सामने आते रहते हैं। कानून देश की नींव होते हैं और पूरे देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और विधिक संरचना कानूनों पर ही आधारित होती है। कानूनों का निर्माण एक ओर नागरिकों की सुरक्षा और उनके अधिकारों की प्राप्ति सुनिश्चित करने और दूसरी तरफ समाज और देश में शांति, सुरक्षा, अनुशासन, व्यवस्था, विकास और प्रगतिशीलता बनाए रखने के लिए किया जाता है। कानूनों का निर्माण उनके ईमानदार एवं सच्चाई से उपयोग तथा अनुपालन के उद्देश्य से होता है, परंतु स्थिति के तब विफल हो जाती है जब नेक नीयत से बनाए गए कानूनों का दुरुपयोग होने लगता है। यह स्थिति देश में विधि के शासन पर स्थापित व्यवस्था के लिए न केवल गंभीर चुनौती पेश करती है, बल्कि उस अवधारणा



को कमजोर कर उसके समक्ष विश्वास का संकट खड़ा कर देती है। भारत में व्यक्तिगत विवादों में कानूनों का दुरुपयोग एक पुरानी समस्या है, लेकिन आज यह केवल कुछ व्यक्तिगत विवादों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह न्याय-प्रणाली, पुलिस-तंत्र और मुकदमेबाजी की संस्कृति से जुड़ा एक गंभीर संरचनात्मक संकट बन चुका है। कानून का उपयोग अधिकारों और दायित्वों के ईमानदारी से क्रियान्वयन के लिए किया जाना चाहिए, लेकिन जब किसी कानून का प्रयोग दबाव डालने, प्रतिशोध लेने, लाभ-अनुपालन के उद्देश्य से होता है, परंतु स्थिति के तब विफल हो जाती है जब नेक नीयत से बनाए गए कानूनों का दुरुपयोग होने लगता है। यह स्थिति देश में विधि के शासन पर स्थापित व्यवस्था के लिए न केवल गंभीर चुनौती पेश करती है, बल्कि उस अवधारणा

अनुकूल स्थिति बनाई है। राष्ट्रीय न्यायिक डाटा ग्रिड के अनुसार, 30 जुलाई, 2026 तक कुल 4,99,११,920 मामले लंबित थे, जिनमें लाखों आपराधिक और सिविल विवाद थे। 3१ दिसंबर, 2024 तक भारत की जेलों की क्षमता 4,53,769 थी, लेकिन वहां 5,११,542 कैदी बंद थे, यानी जेलें 1१2.7 प्रतिशत क्षमता पर चल रही थीं। इसी तारीख पर 3,7१,440 कैदी विचाराधीन लगभग 72.6 प्रतिशत था। भारत में सामान्यतः लगभग हरेक कानून का दुरुपयोग होता है, मगर सर्वाधिक दुरुपयोग संवैधानिक संतुलन बिगड़ जाता है। देश में लंबित मामलों, विचाराधीन कैदियों और अत्यधिक बोझिल आपराधिक न्याय-व्यवस्था ने कानूनों के दुरुपयोग के लिए

का इस्तेमाल बदला, दबाव या समझौते के साधन के रूप में किया जाता है। घरेलू विवाद, देहज-संबंधी आरोप, संपत्ति पर कब्जे और पड़ोसियों के झगड़ों में झूठी प्राथमिकी दर्ज करने और गिरफ्तारी कराने की प्रवृत्ति बढ़ी है। ऐसे में मुकदमे का परिणाम चाहे जो हो, लेकिन प्रक्रिया-भर में प्रतिवादी को सामाजिक, आर्थिक और मानसिक क्षति झेलनी पड़ती है। यही कारण है कि दुरुपयोग की समस्या को केवल झूठे केस कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। यह एक प्रकार से प्रक्रियात्मक दंड की समस्या भी है। समस्या का एक मूल कारण गिरफ्तारी की अत्यधिक उपयोग-वैवाहिक, पारिवारिक, संपत्ति-विवादों और जाति- भेदभाव संबंधी विवादों में दिखता है। अत्यधिक बोझिल आपराधिक न्याय-व्यवस्था ने कानूनों के दुरुपयोग की आशंका बढ़ती है, क्योंकि गिरफ्तारी स्वयं

का इस्तेमाल बदला, दबाव या समझौते के साधन के रूप में किया जाता है। घरेलू विवाद, देहज-संबंधी आरोप, संपत्ति पर कब्जे और पड़ोसियों के झगड़ों में झूठी प्राथमिकी दर्ज करने और गिरफ्तारी कराने की प्रवृत्ति बढ़ी है। ऐसे में मुकदमे का परिणाम चाहे जो हो, लेकिन प्रक्रिया-भर में प्रतिवादी को सामाजिक, आर्थिक और मानसिक क्षति झेलनी पड़ती है। यही कारण है कि दुरुपयोग की समस्या को केवल झूठे केस कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। यह एक प्रकार से प्रक्रियात्मक दंड की समस्या भी है। समस्या का एक मूल कारण गिरफ्तारी की अत्यधिक उपयोग-वैवाहिक, पारिवारिक, संपत्ति-विवादों और जाति- भेदभाव संबंधी विवादों में दिखता है। अत्यधिक बोझिल आपराधिक न्याय-व्यवस्था ने कानूनों के दुरुपयोग की आशंका बढ़ती है, क्योंकि गिरफ्तारी स्वयं

क्या कभी आत्मदैन्य से मुक्त हो सकेंगे हम

कोई भी राष्ट्र जिस स्थिति में होता है, उसके लिए वह खुद जिम्मेदार होता है। जापानी जैसे हैं ,उनका देश वैसा ही है। इसी तरह की बात इजरायल, चीन और ईरान या किसी भी देश के बारे में हो सकती है। भारत भी वैसा ही है, जैसे हम हैं। ऐसे में कभी विदेशी आक्रांताओं,कभी मैकाले और कभी अपनी आजादी के बाद सत्ता में आए नायकों को कोसते हुए हम अपने कर्तव्यबोध से मुक्त हो जाते हैं। कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों की सामूहिक चेतना के आधार पर विकसित होता है। उसका इतिहासबोध, संस्कृतिबोध, मित्रबोध और शत्रुबोध मिलकर उसका निर्माण करते हैं। इनसे ही राष्ट्रीय मानस या राष्ट्रीय भाव बनता है। लंबे समय की गुलामी ने हमें आत्मदैन्य और आत्महीनता की ओर ढकेल दिया। भारतीय समाज के अपने पारंपरिक मूल्यों को छोड़कर हम शासक वर्गों द्वारा थोपी जा रही संस्कृति का अनुमनन करने लगे। हमें लगा हमारे अंग्रेज शासक, उनकी भाषा, पहनावा और उनकी संस्कृति-पंथ सबकुछ हमसे बेहतर है। उनके अनुयायी बनकर ही हमारी मुक्ति है। तत्कालीन समाज के श्रेष्ठ जन भी ब्रिटिश शासन में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कर भारत लौटते थे और खुद को अधा-अधूरा अंग्रेज साबित करने में जुट जाते थे। ऐसे में शेष समाज अपने श्रेष्ठ वर्ग का आचरण



देख वैसा ही बनने का प्रयास करने लगा। देश में तमाम सर, रायबहादुर और साहेब बहादुर हमारे आदर्श बन गए। स्वामी विवेकानंद, लोकमान्य तिलक, महर्षि अरविन्द, महर्षि दयानंद, महात्मा गांधी, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय,रवीन्द्र नाथ टैगोर के बहुत गहरे भारतबोध की प्रज्ञा ने हमें संभाला ,वरना हमारी दास्तान भी न होती दास्तानों में। हमारी हस्ती मिटने से कोई रोक नहीं सकता था। औसत भारतीय का आवरण अंग्रेजी शासनकर्म में कैसा था, कहने की जरूरत नहीं है। हम कोहिनूर को छोड़कर कांच की ओर दौड़ रहे थे। अंग्रेजी भाषा और संस्कृति श्रेष्ठता की परिचायक बन गई। जब तक अपना कोई व्यक्ति या कार्य पश्चिम में

स्थापित न हो जाए, उसे हम श्रेष्ठ मानने को तैयार नहीं थे। अंग्रेजी शासन और उसके बाद के आजादी के साल भी आत्मगौरव के अभाव में गुजरे साल बनकर रह गए। सत्ता के आतंक और सत्ता से जुड़े रहने के आकर्षण से हमने अपने जीवन मूल्यों का सनातन सिद्ध राजमार्ग छोड़कर अंग्रेजीयत की पगडंडियों पर चलना प्रारंभ कर दिया, जो हमारा देखा-परखा रास्ता नहीं था। जाहिर है इस मार्ग पर हम नेतृत्वकर्ता नहीं थे। अंग्रेजी शासन की छोड़कर कांच की ओर दौड़ रहे थे। अंग्रेजी भाषा और संस्कृति श्रेष्ठता की परिचायक बन गई। जब तक अपना कोई व्यक्ति या कार्य पश्चिम में

एक राष्ट्र नहीं है, बताया गया। अनेक स्थानीयताओं को राष्ट्रीयता के बरक्स स्थापित करने के अकादमिक प्रयास ही खूब चले, सफल भी हुए। कैसे और कितने विभाजन गढ़े जा सकते हैं, सारा जोर इसी पर था। भारतीय ज्ञान परंपरा पर चल रहे लोगों के आत्मविश्वास को समाप्त कर इस पूरे विचार को ही पोंगापंथ और पिछड़ेपन के रूप में आरोपित किया जाना फैशन बन गया। राजनीतिक परिवर्तन के कारण लंबे समय के बाद भारत फिर से खुद को खोज रहा है। अपनी जड़ों की तरफ वापसी करना चाहता है। जिसे विचारों की घर वापसी कड़कर संबोधित किया गया। जरूरी है कि भारत प्रेमी बौद्धिक वर्ग सत्य के सूर्य की स्थापना करने के लिए अध्यवसाय में जुट जाए। सिर्फ भावनात्मक प्रवचनों, कार्यक्रमों से आगे बढ़कर भ्रमों के निवारण का जतन करे। ऐसे कुशल बौद्धिक योद्धा ही अपनी ज्ञान परंपरा को सामने लाकर तथ्य, प्रमाणों के साथ उनकी युगानुकूल व्याख्या करेंगे। इसके लिए हमें लोकसंग्रही और विनम्र बनना पहली शर्त है। परंपरा,जीवन पद्धति और परिवार पर छाप संकटों के बीच ये प्रयत्न ही हमें आत्मशक्ति देगे। दुनिया भर में चल रहे सभ्यतागत संघर्ष के बीच भारत को अपनी वृहत्तर भूमिका को निर्वहन करना है, क्योंकि हमारे पास दुनिया को

देने के लिए समावेशी विचार है। जहां साझापन सौंदर्य की तरह है, विविधता और बहुलता का यहां उत्सव मनाया जाता है। हम पूजा में भी अनेक देवताओं की पूजा करते हैं। बहुलतावादी समाज होने कारण हमने मतभिन्नता का सदेव स्वागत किया। इसका उदाहरण हमारी शास्त्रार्थ परंपरा है। इसलिए एक किताब,एक विचार, एक देवता को मानने और दूसरे विचार को समाप्त करने को आतुर विचार भारत को नहीं समझ सकते। जहां दुनिया के हर पंथ के लोग नैसर्गिक सहजता से सांस ले सकते हैं। यहां कोई श्रेष्ठ और निक्छ नहीं है। सब सामान रूप से इस धरती मां की संतानें है। ऐसे में भारत केंद्रित विमर्श ही विश्व शांति का मार्ग है। स्वतः ही मार्ग है, जिस पर चलने के लिए हमें महात्मा गांधी, धर्मपाल, सीताराम गोयल, दीनदयाल उपाध्याय, वासुदेव शरण अग्रवाल, निर्मल वर्मा, विद्यानिवास मिश्रा का अध्ययन मदद कर सकता है। इससे भारत के मूल विचार को समझने तथा भारत का मौलिक चिंतन स्थापित करने में मदद मिलती है। इससे ही गलत बातों का खंडन करते हुए हम सही विमर्श की स्थापना में सफल हो पाएंगे। भारतीय उद्दात जीवन मूल्यों के आधार पर संपूर्ण विश्व के लिए हमें ही वैश्विक बौद्धिक नेतृत्व देना होगा। जिसकी एक झलक हमें

स्वामी विवेकानंद में दिखती है। ऐसे में ‘स्वबोध’ का जागरण ही विकल्प है। पहले हमारे अपने विचार को भारत तो स्वीकार करें। वह आत्मदैन्य से मुक्त होकर भारत को भारत (इंडिया नहीं) की नजर से देखना प्रारंभ करें। वैचारिक साम्राज्यवाद से मुक्ति के लिए कई स्तरों पर कार्य करने की आवश्यकता है। इसे इस तरह से समझिए कि गोरा बनाना और अंग्रेजी सिखाना आज भी हिंदुस्तान में दो सबसे बड़े व्यापार हैं। यही उपनिवेशवादी मानसिकता है। इसके चलते ही हमारे गांव उजड़ते चले गए और संयुक्त परिवार बिखर गए। आज एकल परिवारों के नाते अलग तरह के सामाजिक-सांस्कृतिक संकट हमारे सामने हैं। जाति, भाषा, क्षेत्र,पंथ की लड़ाइयों को छोड़कर भी बहुत ही विभाजनकारी बातें हर दिन आज भी खोजी जाती हैं , फिर आख्यान (नरेंटिव) गढ़े जाते हैं। भारत जिसे कभी इंडिया बनाने की कोशिशें हुईं, उसे भारत बनाए रखने के लिए हमें ही आगे आना होगा। क्योंकि भारत का नष्ट होना, उस विचार का मिट जाना होगा, जिसने हमें वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया। जिसने हमें राम, कृष्ण,शिव, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक देव जैसे नायक दिए। जिसने सर्वे भवन्तु सुखिन में अपनी मुक्ति देखी और लोक-मंगल जिसका मूलमंत्र रहा।



एक नज़र

दिल्ली में मर्डर बेटे को बचाने पहुंची मां को चाकू से गोदकर मार डाला; 2 घायल

नई दिल्ली। नज़फगढ़ के ओल्ड रोशनपुरा इलाके में पुरानी रंजिश को लेकर हुए ख़ूनी संघर्ष में बेटे को बचाने पहुंची नर्सरी शिक्षिका की चाकू गोदकर हत्या कर दी गई। बदमाशों ने बीच-बचाव कर रहे दंपती पर चाकू से ताबड़तोड़ वार किए थे। पेट में गंभीर घाव होने से घायल सीमा ऋषि ने घटना के दो दिन बाद 17 अक्टूबर को दीनदयाल उपाध्याय (डीडीयू) अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। हमले में उनके पति कमल ऋषि और बेटा ध्रुव भी घायल हुए हैं। पुलिस ने मामले के मुख्य आरोपी सतीश लांबा को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस अब मामले की जांच कर रही है। वारदात 15 अक्टूबर की रात करीब 11:15 बजे ओल्ड रोशनपुरा के मकान नंबर- 121 के पास हुई। पेशे से टैपो चालक कमल ऋषि के मुताबिक, करीब 10 दिन पहले उनके बेटे ध्रुव के दोस्त देव बख्शी का सतीश लांबा से विवाद हुआ था। उस दौरान देव और उसके साथियों ने सतीश की पिटाई कर दी थी। इसी का बदला लेने के लिए 15 अक्टूबर की रात जब ध्रुव, देव और अफजल बाइक से नांगलोई स्टैंड से लौट रहे थे, तभी सतीश ने अपने साथी सोनू और मीतू के साथ मिलकर उन्हें घेर लिया। हमले के दौरान देव किसी तरह जान बचाकर भागा और ध्रुव के घर पहुंचकर परिजनों को मारपीट की सूचना दी। सूचना के बाद पुलिस ने एक्शन शुरू कर दिया है। बेटे की जान खतरे में देख कमल और सीमा तुरंत मौके पर पहुंचे। आरोप है कि बीच-बचाव करने पर सतीश ने सीमा के पेट में चाकू घोंप दिया। पत्नी को बचाने आगे बढ़े कमल की गर्दन के पिछले हिस्से में भी पीछे से चाकू मारा गया। इसके बाद हमलावरों ने सीमा पर दोबारा वार किए। भांजे विवेक ने लहलुहान हालत में सीमा को आरएचटीसी अस्पताल पहुंचाया, जहां से उन्हें डीडीयू अस्पताल रेफर कर दिया गया। डॉक्टरों के अनुसार, चाकू के गहरे वार से उनकी किडनी और आंतें बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थीं, जो उनकी मौत का कारण बनीं। संघर्ष के दौरान मुख्य आरोपी सतीश लांबा भी घायल हुआ था, जिसे अस्पताल में उपचार के बाद पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की है। क्राइम और एफएसएल की टीम ने मौके से साक्ष्य जुटाए हैं। फरार आरोपियों सोनू और मीतू की गिरफ्तारी के लिए पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

दिल्ली में रविवार की रात इस अक्टूबर की अब तक की सबसे ठंडी, 17.1 डिग्री रखा न्यूनतम तापमान

नई दिल्ली। दिल्ली में मौसम अब तेजी से करवट लेने लगा है। बीते कुछ दिनों से मौसम सुहाना है। रविवार को इस महीने की अब तक की सबसे ठंडी रात दर्ज की गई और इस दौरान न्यूनतम तापमान 17.1 डिग्री सेल्सियस रहा, जो मौसम के सामान्य तापमान से 1.3 डिग्री कम है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी। रविवार को न्यूनतम तापमान शनिवार के मुकाबले 1.5 डिग्री सेल्सियस कम रहा। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने सोमवार को बताया कि पालम में न्यूनतम तापमान 16.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से दो डिग्री कम है। वहीं, लोधी रोड और आयानगर में न्यूनतम तापमान 16.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो इन दोनों स्थानों पर भी सामान्य से दो डिग्री कम है। आईएमडी के अनुसार, रिज में न्यूनतम तापमान 17.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 1.8 डिग्री कम है। मौसम विभाग ने दिन में आसमान मुख्य रूप से साफ रहने का अनुमान जताया है। अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की संभावना है। आपको बता दें कि इस महीने दिल्ली का सबसे कम न्यूनतम तापमान 18.6 डिग्री सेल्सियस रविवार को दर्ज किया गया, जो मौसम के औसत तापमान से 0.2 डिग्री सेल्सियस अधिक है। अधिकारियों ने बताया था कि दिल्ली में अधिकतम तापमान 31.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस मौसम के औसत तापमान से 0.9 डिग्री कम है। सोमवार सुबह 8.30 बजे समाप्त हुए 24 घंटे की अवधि के दौरान दिल्ली के पांचों मौसम केंद्रों में कहीं भी बारिश दर्ज नहीं की गई। सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, सोमवार सुबह आठ बजे दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 118 दर्ज किया गया, जो सतोषजनक श्रेणी में आता है। समीर ऐप के अनुसार, रविवार शाम छह बजे एक्यूआई 184 दर्ज किया गया था, जो मध्यम श्रेणी में आता है। सीपीसीबी के अनुसार, एक्यूआई को शून्य से 50 के बीच अच्छा, 51 से 100 के बीच सतोषजनक, 101 से 200 के बीच मध्यम, 201 से 300 के बीच खराब, 301 से 400 के बीच बहुत खराब और 401 से 500 के बीच गंभीर श्रेणी में माना जाता है। आपको बता दें कि दिल्ली में ठंड के दिन शुरू होने के साथ ही प्रदूषण की समस्या भी बढ़ने लगती है। पराली जलाने की घटनाएं एक मुख्य वजह में से एक है। तमाम कोशिशों के बावजूद इसपर उस हद तक रोक नहीं लगाई जा सकी है।

एक्सीडेंट में पैर गंवाने वाली महिला को मिलेगा 2.55 करोड़ का मुआवजा

नई दिल्ली। दिल्ली के एक मोटर एक्सीडेंट व्लेम ट्रिब्यूनल ने महिला को 2.55 करोड़ रुपए देने का आदेश दिया है। ट्रिब्यूनल ने ये फैसला ट्रक से अपने स्कूटर में टक्कर लगने पर अपना बायां पैर गंवा चुकी 26 साल की एक उद्यमी मुआवजा दिए जाने का आदेश दिया है। पीठासीन अधिकारी गुंजन गुप्ता पीड़ित रीना की एक दावा याचिका पर सुनवाई कर रही थीं। उन्होंने ट्रक की बीमा कंपनी, नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड को निर्देश दिया कि वह 30 दिनों के भीतर 2.55 करोड़ रुपये का भुगतान करे, जिस पर 22 फरवरी 2025 से नौ प्रतिशत वार्षिक ब्याज भी देय होगा। न्यायाधिकरण ने 15 अक्टूबर के अपने आदेश में कहा कि इस

फैसले के पिछले हिस्से में आकलन किया गया है कि याचिकाकर्ता की कार्यात्मक अक्षमता शत-प्रतिशत है। इस अक्षमता और इसके कारण आने वाली कठिनाइयों को देखते हुए और इसमें सुधार की कोई गुंजाइश नहीं होने के कारण, याचिकाकर्ता अब वैसा जीवन नहीं जी पाएंगी जैसा वह दुर्घटना से पहले जीती थी। यह हादसा पांच नवंबर 2024 को पीरागढ़ी चौक पर हुआ। रीना अपने दो साल के बेटे के साथ स्कूटर पर पीछे बैठी थी, तभी एक ट्रक ने स्कूटर को टक्कर मार दी। ट्रक का एक पहिया उसके बाएं पैर के ऊपर से गुजर गया, जिसे बाद में काटना पड़ा। उसकी तीन सर्जरी हुईं। बीमा कंपनी ने स्कूटर चालक को दोषी ठहराया

और तर्क दिया कि महिला ने हेलमेट नहीं पहना था। न्यायाधिकरण ने इन तर्कों को खारिज कर दिया और कहा कि लापरवाही से गाड़ी तेज चलाने के बारे में रीना की गवाही का कोई खंडन नहीं किया गया। ट्रक का चालक और मालिक महिंदर सिंह न्यायाधिकरण के सामने पेश नहीं हुआ, जिसके चलते उसके खिलाफ प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला गया। मुआवजे का बड़ा हिस्सा, यानी 1.68 करोड़ रुपये, भविष्य में कमाई की क्षमता के नुकसान के लिए दिया गया था। हालांकि बाएं पैर की विकलांगता 80 प्रतिशत प्रमाणित की गई थी, लेकिन न्यायाधिकरण ने कार्यात्मक विकलांगता शत-प्रतिशत मानी, क्योंकि रीना को अपना

व्यवसाय बंद करना पड़ा था। सुप्रीम कोर्ट के हालिया फैसले का हवाला देते हुए न्यायाधिकरण ने उनकी मासिक आय 58,915 रुपये मानी, जिसमें एक गृहिणी के रूप में उनके योगदान के लिए 6,000 रुपये भी शामिल थे। उनके तीन बच्चे हैं, जिनकी उम्र दो से चार साल के बीच है। न्यायाधिकरण ने कहा कि बिल न होने के आधार पर चिकित्सा खर्चों के दावे को खारिज नहीं किया जा सकता। उसने यह भी कहा कि कोई दोषी व्यक्ति पीड़ित की मेडिकल पॉलिसी का फायदा नहीं उठा सकता। न्यायाधिकरण ने पीड़ित को विभिन्न मर्दों के तहत कुल 2.55 करोड़ रुपये दिए जाने का फैसला सुनाया।

4 सवारी से ज्यादा नहीं, दिल्ली में तय होगी ई-रिक्शा की संख्या; दिल्ली सरकार का प्रस्ताव

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग ने राजधानी में ई-रिक्शा की संख्या को 2.5 लाख तक सीमित करने और इसके साथ ही ई-रिक्शा अनुपालन प्रमाण पत्र लेने को अनिवार्य करने का प्रस्ताव पारित किया है। योजना लागू होने के बाद बिना रजिस्ट्रेशन के चलने वाले ई-रिक्शा को जब्त कर लिया जाएगा और उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा। दिल्ली ई-रिक्शा (पंजीकरण और संचालन) योजना, 2026 का मसौदा 18 अक्टूबर को एक सर्वकृतर के जरिए सार्वजनिक परामर्श के लिए जारी किया गया है। इसमें हितधारकों और आम जनता से 30 दिनों के भीतर अपनी राय देने को कहा गया है। इस दौरान दिल्ली में चलने वाले ई-रिक्शा में सवारियों की संख्या भी फिक्स कर दी जाएगी। ये प्रस्ताव अभी लागू नहीं हुए हैं। यह योजना सरकारी राजपत्र में प्रकाशित होने के बाद लागू होगी और प्रारंभिक तौर पर पांच साल तक प्रभावी रहेगी, बशर्ते इसमें कोई बदलाव न किया जाए। इसे आगे न बढ़ाया जाए या पहले ही वापस न ले लिया जाए। इस मसौदा के अनुसार पहले से रजिस्टर्ड ई-रिक्शा मालिकों को योजना लागू होने की तारीख से 90 दिनों के भीतर (या विभाग द्वारा तय की गई अतिरिक्त समय-सीमा के अंदर) ई-रिक्शा अनुपालन प्रमाण पत्र (ईसीसी) लेना होगा। यह समय-सीमा खत्म होने के बाद ई-रिक्शा की संख्या की सीमा (2.5 लाख) लागू हो जाएगी। इससे पहले से रजिस्टर्ड वाहनों को प्रमाण पत्र लेने की प्रक्रिया पूरी करने का मौका मिलेगा। जिन वाहनों के पास वैध ईसीसी होगा, उन्हें इस सीमा (2.5 लाख की संख्या) में गिना जाएगा। सरकार समय-समय पर इस सीमा की समीक्षा भी कर सकती है। डिजिटल रूप से जारी किया गया हर प्रमाण पत्र दो साल के लिए वैध होगा, बशर्ते उसे पहले निर्लंबित या रद्द न किया जाए। एक प्रमाण पत्र एक वाहन और एक अधिकृत ड्राइवर से जुड़ा होगा। एक ड्राइविंग लाइसेंस का इस्तेमाल एक समय में केवल एक ही वैध ईसीसी के लिए किया जा सकेगा। योजना लागू होने के बाद बिना रजिस्ट्रेशन के चलते पाए जाने वाले ई-रिक्शा को तुरंत जब्त कर लिया जाएगा। मसौदा में कहा गया है कि एक बार जब्त किए जाने के बाद बिना रजिस्ट्रेशन वाले ई-रिक्शा को किसी भी स्थिति में वापस नहीं छोड़ा जाएगा। ऐसे वाहनों को तय नियमों के तहत नष्ट कर दिया जाएगा और उनकी नीलामी की जाएगी। वहीं इनकी बैटरियों को निपटान के लिए रजिस्टर्ड रीसाइक्लर्स को नीलाम कर दिया जाएगा। अगर कोई रजिस्टर्ड ई-रिक्शा, तय समय-सीमा खत्म होने के बाद बिना वैध ईसीसी के चलता पाया जाता है, तो उसे भी जब्त कर लिया जाएगा। इसे वापस पाने के लिए मालिक को प्रमाण पत्र लेना होगा और तय जुर्माना भरना होगा। अगर वाहन जब्त होने के 15 दिनों के भीतर ईसीसी नहीं लिया जाता है, तो कानून के अनुसार उसे नष्ट करने की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है। ई-रिक्शा के मालिक का दिल्ली का निवासी होना जरूरी है और एक व्यक्ति अधिकतम पांच ई-रिक्शा का मालिक हो सकता है। पात्र इकाइयां अधिकतम 100 वाहन रख सकती हैं और अपना 25वां वाहन रजिस्टर करने के एक महीने के भीतर उन्हें एग्रीगैटर लाइसेंस लेना होगा।

बहाल की जाए नमाज, रेस कोर्स मस्जिद मामले में जमीयत के नेताओं ने रिजिजू से की मुलाकात

नई दिल्ली। जमीयत उलमा-ए-हिंद के महासचिव मौलाना मुहम्मद हकीमुद्दीन कासमी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू से मुलाकात कर नई दिल्ली में मकबरा सफ़दरजंग की पीछे स्थित ऐतिहासिक रेस कोर्स मस्जिद और उससे सटे कब्रिस्तान के संरक्षण का मामला उठाया। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल ने जमीयत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद अरसद मदनी की ओर से मंत्री को एक विस्तृत मेमोरेंडम सौंपा। इसमें मस्जिद और कब्रिस्तान के धार्मिक,

सूची में संपत्ति पहचान संख्या के साथ इसका शामिल होना प्रमुख है। मस्जिद और कब्रिस्तान की मौजूदा स्थिति पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए मेमोरेंडम में कहा गया कि मस्जिद में नमाजियों की आवाजाही पर पाबंदी, पानी और बिजली का आपूर्ति बंद किए जाने के साथ ही मस्जिद को ध्वस्त किए जाने की आशंकाओं के मद्देनजर इन धार्मिक संपत्तियों के संरक्षण के लिए तत्काल कदम उठाना आवश्यक है। जमीयत उलमा-ए-हिंद ने केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री से इस मामले का तत्काल संज्ञान लेने और संबंधित अधिकारियों, भारत सरकार की संशोधित

जुबिन नैटियाल के पिता रामशरण नैटियाल ने कांग्रेस जॉइन की, कहा- भाजपा में अपमान हुआ

नई दिल्ली। लोकप्रिय बॉलीवुड सिंगर जुबिन नैटियाल के पिता और पूर्व भाजपा नेता रामशरण नैटियाल ने आज कांग्रेस पार्टी जॉइन कर ली है। उन्हें उत्तराखंड कांग्रेस प्रभारी कुमार सैलजा ने नई दिल्ली कांग्रेस मुख्यालय में पार्टी जॉइन कराई। इस दौरान नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य, प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल और देहरादून चकराता से कांग्रेस विधायक प्रीतम सिंह भी मौजूद थे। नैटियाल ने कुछ दिन पहले भाजपा से इस्तीफा दे दिया था। रामशरण नैटियाल ने तब आरोप लगाया था कि भाजपा में उन्हें सम्मान नहीं मिल रहा था। आरोप लगाया कि उन्हें कई बार सार्वजनिक तौर पर अपमान झेलना पड़ा। सोमवार को तय कार्यक्रम के मुताबिक, रामशरण नैटियाल ने कांग्रेस पार्टी का दामन थामा। वो पिछले कुछ दिनों से भाजपा से नाराज चल रहे थे। पिछले महीने से उनकी भाजपा में नाराजगी सामने आई थी। रामशरण नैटियाल ने तब कहा था कि उन्होंने अपना इस्तीफा खुद सौंपने के बजाय अपने स्टैनोग्राफर के जरिए भिजवाया था। भाजपा छोड़ने की वजह पूछे जाने पर नैटियाल ने कहा कि कोई भी व्यक्ति उस जगह को आसानी से नहीं छोड़ता, जहां उसने 12 साल तक काम किया हो। उन्होंने कहा, व्यक्ति जहां भी काम करता है, वहां उसे सम्मान मिलना चाहिए। अगर सम्मान नहीं मिलता, तो वह दूरी बना लेता है। रामशरण नैटियाल ने कुछ दिन पहले कहा था कि उनके पार्टी छोड़ने की पूरी वजह प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट से पूछी जानी चाहिए, लेकिन सामान्य शिष्टाचार यही है कि हर व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत सम्मान से पेश आया जाए। उन्होंने कहा कि अगर कोई पार्टी केवल दो-तीन लोगों के इशारे पर चलती है, तो शिकायतें भी उन्हीं लोगों से होती हैं, जो नेतृत्व की भूमिका में हैं। नैटियाल ने कहा कि उन्हें सार्वजनिक मंचों पर अपमानित होना पड़ा।

दोस्त की बीवी से शादी की चाहत में दी सुपारी, 100 रुपये के यूपीआई का झांसा दे ऐसे कराया मर्डर; 7 गिरफ्तार



गया। 13 अक्टूबर को मनीष अपनी बहन को परीक्षा दिलाने नोएडा गया था। रात करीब 9.10 बजे जब वह लौटा, तो उमेश, विवेक और उनका साथी आनंद 4.5 पुश्ता के पास घात लगाकर बैठ गए। जबकि दोनों नाबालिग शूटर बाइक पर तैयार थे। मनीष को घर से

बाहर निकालने के लिए उमेश ने पहले उससे उधार के 1000 रुपये मांगे और फिर उसे UPI के जरिए 100 रुपये भेजकर कहा कि वह बाहर आकर उसे 100 रुपये कैश दे दे। जैसे ही मनीष पैसे देने घर से बाहर निकला, आनंद ने शूटरों को इशारा कर दिया। हेलमेट

दिल्ली लोक अदालात ट्रैफिक चालान माफ करवाने का मौका, घर बैठे आसानी से ऐसे डाउनलोड करें टोकन

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में 25 अक्टूबर को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। वाहन मालिकों के पास अपने पेंडिंग चालान को माफ करवाने का यह अच्छा मौका है। दिल्ली स्टेट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी के ताजा नोटिस के मुताबिक लोक अदालत में 30 जून 2026 तक के पेंडिंग कंपाउंडेबल यानी समझौते योग्य चालानों पर सुनवाई की जाएगी। आप चाहते हैं कि लोक अदालत में आपके भी पेंडिंग चालान की सुनवाई हो इसके लिए आपको चालान की रिलप (टोकन) डाउनलोड करनी होगी। इसके बिना आपके चालान पर सुनवाई नहीं हो सकेगी।19 अक्टूबर यानी आज सुबह 10 बजे से दिल्ली ट्रैफिक पुलिस लोक अदालत पोर्टल से रिलप डाउनलोड करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। ऐसे में हम आपको इसे कैसा डाउनलोड किया जाएगा इसके बारे में बता रहे हैं।
1. दिल्ली ट्रैफिक पुलिस लोक अदालत के आधिकारिक पोर्टल पर जाएं।
2. अब अपना व्हीकल रजिस्ट्रेशन नंबर दर्ज कीजिए।
3. पेज पर दिख रहे वरिफिकेशन कोड प्रोसेस को पूरा करें।
4. पोर्टल पर दिखाए गए चालान या नोटिस की डिटेल देखें।
5. अब रिलप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए निर्देश को फॉलो करें। इसके बाद प्रिंट निकाल कर रख लें। आपको बता दें कि प्रतिदिन चालान/नोटिस रिलप डाउनलोड करने की सीमा तय की गई है। यानी अदालत में प्रति दिन 50,000 ट्रैफिक चालान निपटाने की सीमा। ऐसे में कुल निर्धारित सीमा पूरी होने के बाद चालान/नोटिस रिलप डाउनलोड करने की सुविधा बंद हो जाएगी ऐसे में सुबह 10 बजे ही रिलप डाउनलोड के लिए तैयार रहना होगा। वाहन मालिक यह न सोचे कि वे किसी भी समय रिलप डाउनलोड कर सकेंगे।

नाबालिग रेप पीड़िता को गर्भपात की इजाजत, दिल्ली हाई कोर्ट ने वजह भी बताई

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने रेप पीड़ित नाबालिग गर्भवती को लड़की को लेकर बड़ा सुनाया है। कोर्ट ने 16 साल की नाबालिग लड़की के 31 हफ्ते के गर्भ गर्भपात की इजाजत दे दी है। हाई कोर्ट ने गर्भपात की इजाजत देते हुए कहा कि किसी नाबालिग बच्ची से बच्चा पैदा करने और पालने का बोझ उठाने की उम्मीद करना सही नहीं है। कोर्ट ने गर्भपात का खर्च उठाने के लिए राज्य सरकार को निर्देश जारी किया है। हाई कोर्ट ने गर्भ को खत्म करने की इजाजत देते हुए कहा कि कि रेप की शिकार किसी नाबालिग के मामले में गर्भपात को केवल रेप पीड़िता के अधिकार के तौर पर नहीं, बल्कि इसे मानवीय अधिकार के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। कोर्ट ने कहा कि नाबालिग के मामले में अगर गर्भपात की इजाजत नहीं दी जाती है, तो इससे रेप पीड़िता के सम्मानपूर्व जिंदगी जीने पर असर पड़ सकता है। इस मामले की सुनवाई करते हुए दिल्ली हाई कोर्ट

की जस्टिस मिनी पुक्कर्णा ने कहा कि नाबालिग को गर्भपात की इजाजत इसलिए दी जानी चाहिए, क्योंकि अगर रेप पीड़िता नाबालिग बच्चे को जन्म देगी तो सम्मानपूर्वक जीवन जीने में उसे परेशानी का सामना करना पड़ेगा। इसलिए किसी नाबालिग बच्ची से बच्चे को जन्म देने और उसको पालने की उम्मीद करना सही नहीं है, जबकि वो खुद अभी नाबालिग है। मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट के अनुसार, सामान्य मामलों में 20 हफ्ते तक के और कुछ मामलों में 24 हफ्ते के गर्भ के गर्भपात की इजाजत दी जा सकती है। कोर्ट ने पहले मेडिकल बोर्ड से पूछा कि क्या बच्चे के गर्भ का मेडिकल टर्मिनेशन किया जा सकता है, तो बोर्ड ने जवाब देते हुए कहा कि हां नाबालिग लड़की गर्भपात के लिए अभी फिट है। इसके बाद कोर्ट ने गर्भपात की प्रक्रिया की इजाजत दे दी। कोर्ट ने गर्भपात में आने वाले खर्च की जिम्मेदारी राज्य सरकार को दी है।

सौरभ दास और आशुतोष रांका की बढ़ सकती हैं मुश्किलें, क्राइम ब्रांच के हवाले जांच

नई दिल्ली। CJP नेता सौरभ दास और आशुतोष रांका की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। दिल्ली पुलिस के सूत्रों ने बताया है कि सौरभ दास और आशुतोष रांका से जुड़े अनधिकृत प्रवेश के मामले को क्राइम ब्रांच के हवाले कर दिया गया है। अब दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच इस मामले की जांच करेगी। सौरभ दास और आशुतोष रांका को यह झटका ऐसे वक लगा है जब विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट अदालत ने उनकी न्यायिक हिरासत को दो दिन के लिए और बढ़ा दिया है। बता दें कि जंतर-मंतर को प्रदर्शन स्थल से बाहर किए जाने के बाद सौरभ दास और आशुतोष रांका ने वहां कथित तौर पर अनधिकृत रूप से प्रवेश किया था। इन दोनों को तब हिरासत में लिया गया था जब वे कथित तौर पर जंतर-मंतर के एक बंद गेट को फांदकर अंदर घुस गए थे। इससे पहले जंतर-मंतर को विरोध



प्रदर्शन स्थल की लिस्ट से हटा दिया गया था। दोनों को एहतियातन गिरफ्तार कर लिया गया था। बाद में उनको 13 अक्टूबर को 5 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया था। अब इस पूरे प्रकरण में दोनों की एंटी के कारण सौरभ दास और आशुतोष रांका की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। क्राइम ब्रांच इस मामले में थै। इससे पहले जंतर-मंतर को विरोध

पूछताछ भी कर सकती है। ऐसे में जब दोनों पहले से ही न्यायिक हिरासत में है। जांच के मद्देनजर उनकी हिरासत भी मांगी जा सकती है। कुल मिलाकर दोनों कानूनी विवाद में उलझते दिख रहे हैं। हालांकि देखने वाली बात होगी कि क्राइम ब्रांच इस पूरे प्रकरण में क्या रुख अपनाती है। सूत्रों की मानें तो दिल्ली पुलिस की ओर से दोनों की न्यायिक

हिरासत बढ़ाए जाने की मांग की गई जिसके बाद विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट कोर्ट ने सौरभ और आशुतोष की न्यायिक हिरासत दो दिन और बढ़ा दी। सौरभ दास और आशुतोष रांका के वकील अभिक चिमनी ने फैसले के बाद बताया कि दिल्ली पुलिस का कहना है कि दोनों की रिहाई से सार्वजनिक व्यवस्था और शांति को खतरा है। ऐसे में इन आरोपियों को न्यायिक हिरासत में रखा जाना बेहद जरूरी है। अब सीजेपी इस मामले को लेकर कानूनी सलाह लेने और विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट अदालत के फैसले को चुनौती देने की बात कह रही है। बार एंड बैच की रिपोर्ट के मुताबिक, गौर करने वाली बात यह भी है कि न्यायिक हिरासत बढ़ाने के फैसले के दौरान विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट कोर्ट ने कहा कि सौरभ दास और आशुतोष रांका ने अपनी बॉन्ड शर्तों का उल्लंघन किया है।



एक नज़र

पिता ने 22 साल की बेटी को सोते समय मार दी गोली, अपनी मर्जी से करना चाहती थी शादी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी से हैरान कर देने वाली एक खबर सामने आई है। यहां एक पिता ने अपनी 22 साल की बेटी को सोते समय गोली मार दी। बेटी को गर्दन में गोली लगी है। उसकी हालत गंभीर है। पुलिस ने उसे जिला अस्पताल की इमरजेंसी में भर्ती कराया है। बेटी का कसूर सिर्फ इतना था कि वह अपनी मर्जी से, अपनी पसंद के युवक से शादी करना चाहती थी। जबकि पिता ने उसकी शादी कहीं और तय कर दी थी। बेटी के प्रेम संबंध से नाराज पिता ने उसे खत्म करने का फैसला कर लिया। उसने सोते समय बेटी पर वार किया। घटना मैनपुरी के एलाऊ थाना के गांव दिवलपुर का है। सूचना पर मौके पर पहुंची ने हमलावर पिता को गिरफ्तार कर लिया है। एलाऊ थाना क्षेत्र के ग्राम दिवलपुर के रहने वाले यासीन खां ने सोमवार को अपनी 22 वर्षीय बेटी को तमंचे से गोली मार दी। गोली उसकी गर्दन में पीछे लगी। इससे वह घायल होकर गिर पड़ी। आनन–फानन में उसे जिला अस्पताल की इमरजेंसी में लाया गया। वहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। घटना की सूचना पाकर एमपी सिटी अरुण कुमार, सीओसिटी अशोक कुमार, थाना प्रभारी अवनीश कुमार त्यागी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। थाना प्रभारी ने ही अपनी गाड़ी से उसे अस्पताल भिजवाया। थाना प्रभारी ने बताया कि घटना के बाद आरोपी पिता गांव के ही एक खेत में छिप गया था। घेराबंदी कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। बेटी को गोली मारने के आरोपी पिता ने पुलिस को पृष्ठताछ में बताया कि उसकी बेटी के प्रेम संबंध एक युवक से हैं। वह उसी युवक से शादी करना चाहती है। जबकि उसने अपनी बेटी की शादी दूसरी जगह तय कर दी थी। सोमवार को इसी बात को लेकर विवाद हुआ। पिता के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पृष्ठताछ के बाद उसे जेल भेज दिया गया है। वहीं, मैनपुरी के जिला अस्पताल में भर्ती घायल लड़की की हालत गंभीर बनी हुई है। पिता द्वारा अपनी ही बेटी को गोली मारे जाने की इस घटना की पूरे इलाके में चर्चा है। लोग कह रहे हैं कि झूठी शान के लिए यासीन ने यह कदम उठाया है। यासीन की झूठी शान की शिकार उसकी 22 साल की बेटी हुई है। लोग उम्मीद जता रहे हैं कि कानून यासीन को उसके किए की सजा जरूर देगा। इसके साथ ही लोग घायल लड़की के जल्द स्वस्थ होने के लिए दुआ भी मांग रहे हैं।

नाबालिग लड़की का धर्म बदलवाकर किया निकाह, पोल्ट्री फार्म कर्मचारी गिरफ्तार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के संतकबीरनगर में एक नाबालिग लड़की को पोल्ट्री फार्म पर काम करने वाला एक शख्स बहला फुसलाकर भगा ले गया। आरोप है कि उसने लड़की का धर्म बदलवाकर उससे निकाह कर लिया। जिले के मेहदावल थाना क्षेत्र के एक गांव से लापता इस किशोरी को पुलिस ने बरामद कर लिया है। मामले में पुलिस ने बखिरा थाना क्षेत्र के सई बुजुर्ग गांव निवासी मोहम्मद सलीम को हिरासत में लिया है। पुलिस के अनुसार मामले की विवेचना और साक्ष्य संकलन के दौरान किशोरी का कथित तौर पर धर्म परिवर्तन कराकर उसका नाम बदलने और निकाह कराने के तथ्य सामने आए हैं। इसके बाद पुलिस ने पहले से दर्ज मुकदमे में संबंधित धाराएं बढ़ा दी हैं। मामले में आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है। पुलिस के मुताबिक, पीड़ित भाई ने थाने में तहरीर देकर बताया था कि उसकी नाबालिग बहन 23 अगस्त 2026 को सुबह करीब 11 बजे घर से लापता हो गई थी। परिजनों ने उसकी काफी तलाश की, लेकिन उसका कोई पता नहीं चल सका। बाद में जानकारी मिली कि बखिरा थाना क्षेत्र के सई बुजुर्ग गांव निवासी मोहम्मद सलीम पुत्र शब्बीर उसे बहला–फुसलाकर और लालच देकर अपने साथ मुंबई ले गया है। इसके बाद परिजनों ने पुलिस से शिकायत कर किशोरी के बरामदगी की मांग की थी। शिकायतकर्ता के अनुसार, आरोपी पहले उसके गांव में एक पोल्ट्री फार्म पर काम करता था। इस दौरान उसका घर आना–जाना हो गया था। बाद में वह बखिरा क्षेत्र के अमरडोभा निवासी इरशाद के यहां काम करने लगा। बहन के लापता होने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की थी। मामले में प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार सिंह का कहना है कि किशोरी की बरामदगी के बाद मामले की गहनता से जांच की गई। विवेचना के दौरान सामने आए तथ्यों के अनुसार, किशोरी का कथित तौर पर धर्म परिवर्तन कराकर उसका नाम बदलकर सलमा खातून कर दिया गया और उससे निकाह कराया गया। जांच के आधार पर पुलिस ने मुकदमे में अपहरण के साथ ही उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम की धारा भी बढ़ा दी है।

यूपी के बिजली का फिर लागू हो सकता है पुराना सिस्टम, सब स्टेशनों से मिलेगा समाधान

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के बड़े शहरों में बिजली वितरण की वर्टिकल व्यवस्था पर नए सिरे से मंथन होगा। सूत्र बताते हैं कि वर्टिकल व्यवस्था की तमाम खामियों को देखते हुए इसे समाप्त करके पुरानी व्यवस्था की तरफ लौटा जा सकता है। पुरानी व्यवस्था में बिजली की सभी दिक्कतों का एकीकृत समाधान उपकेंद्रों से हो जाता था, जबकि वर्टिकल व्यवस्था में वितरण से जुड़ी सभी व्यवस्थाओं के लिए अलग–अलग जिम्मेदार बनाए गए हैं। पुरानी व्यवस्था को खत्म करके लखनऊ, मेरठ, कानपुर, वाराणसी, अलीगढ़, नोएडा आदि शहरों में वर्टिकल व्यवस्था लागू की गई थी। इसके मुताबिक, अगर किसी भी व्यक्ति को मीटर संबंधी दिक्कत है तो उसे मीटर का काम देख रहे अभियंता से ही संपर्क करना होगा। वहीं, पुरानी व्यवस्था में

मीटर हो या बिजली फॉल्ट या कोई और दिक्कत उपभोक्ता को उपकेंद्र पर ही संपर्क करना होता था। सामान्य उपभोक्ताओं के लिए यह मुश्किल होता है कि वह शुरुआती दौर में ही इस बात का अंदाजा लगा सके कि उसकी दिक्कत की वजह क्या है और किससे उसे संपर्क करना होगा। ऐसे में वर्टिकल व्यवस्था को लेकर सवाल उठने लगे थे। सता और विपक्ष के तमाम जनप्रतिनिधियों ने इस व्यवस्था की खामियां गिनाते हुए पावर कॉरपोरेशन व वितरण निगमों के प्रबंध निदेशकों को पत्र भी लिखा था। बीते दिनों नियामक आयोग में भी इस व्यवस्था को चुनौती दी गई है। राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद ने आयोग में याचिका दायर की थी कि बिना आयोग की सहमति के वितरण व्यवस्था के ढांचे में पावर कॉरपोरेशन बदलाव नहीं कर सकता। अभी यह

मामला विचाराधीन है। इसके अलावा आयोग ने इस साल के टैरिफ आदेश में पावर कॉरपोरेशन को वर्टिकल व्यवस्था का थर्ड पार्टी मूल्यांकन करवाने को कहा था। अक्तूबर तक यह हो जाना चाहिए था। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ है। उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष अवधेश कुमार वर्मा ने कहा कि मूल्यांकन न करवाए जाने पर वह एक बार फिर आयोग का रुख करेंगे। ऐसी परिस्थितियों को देखते हुए माना जा रहा है कि वर्टिकल व्यवस्था को लेकर एक बार फिर नवंबर से मंथन शुरू होगा, जिसके बाद इसे वापस लिया जा सकता है। वहीं, दशहरा के मौके पर शहर से लेकर गांव तक जगमग रहेंगे। शहरी इलाकों की तरह ही गांवों में भी 24 घंटे बिजली आपूर्ति के आदेश योगी सरकार ने दिए हैं। यही नहीं, इसके बाद दीपावली और छठ समेत अन्य त्योहारों पर

प्रदेशवासियों को निर्बाध बिजली आपूर्ति की तैयारियां तेज कर दी गई हैं। पावर कॉरपोरेशन के प्रबंध निदेशक नितीश कुमार ने बताया कि दशहरा के अवसर पर रोस्टर व्यवस्था को खत्म कर दिया जाएगा। रोस्टर के मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों को 18 घंटे बिजली मिलती है। हालांकि, त्योहार के मद्देनजर ग्रामीण क्षेत्रों में भी 24 घंटे बिजली आपूर्ति की जाएगी। यही नहीं, जिलों में तहसील, नगर पंचायत और अन्य क्षेत्रों के लिए भी तय रोस्टर के इतर 24 घंटे बिजली आपूर्ति के आदेश जारी कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा है कि त्योहारों के दौरान प्रदेशभर में बिजली आपूर्ति सुचारु बनी रहे। आने वाले त्योहारों में भी लोगों को निर्बाध बिजली आपूर्ति मिले, इसके लिए पांचों डिस्कॉम विद्युत व्यवस्था दुरुस्त करने में जुटे हैं।

आज रात से एनसीआर को गंगा जल की सप्लाई बंद, मेरठ से दिल्ली तक बढ़ेगा संकट

लखनऊ। 20 अक्टूबर की आधी रात से दिवाली के दिन तक मेरठ, मुरादनगर, एनसीआर के गाजियाबाद और दिल्ली के कुछ इलाकों में गंग नहर से गंगा जल की सप्लाई बंद रहेगी। इससे पानी को लेकर संकट की स्थिति आ सकती है। हालांकि प्रशासन की ओर से बड़े स्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। जल निगम, नगर निगम को वैकल्पिक व्यवस्था के लिए कहा गया है। इस दौरान हरिद्वार से ही गंग नहर में पानी की सप्लाई नहीं होगी। गंगनहर की सालाना सफाई और मरम्मत के काम के लिए गंगाजल आपूर्ति को 20 अक्टूबर की आधी रात से 8 नवंबर तक बंद किया जाना है। गंग नहर मेरठ खंड के एक्सईएन विकास त्यागी के अनुसार हर वर्ष मुजफ्फरनगर, मेरठ, गाजियाबाद और हापुड़ जिले के अंतर्गत पड़ने वाले रजवाहों और माइनरों की सिल्ट सफाई का काम किया जाता है। इसके लिए हरिद्वार से गंगा जल की सप्लाई को विजयादशमी यानी 20 अक्तूबर की रात से दीवाली यानी आठ नवंबर तक बंद रखा जाएगा। इस दौरान गंग नहर की सप्लाई और सिल्ट सफाई का काम किया जाएगा। वार्षिक नहरबंदी और सिल्ट सफाई के कारण हरिद्वार से लेकर मेरठ, गाजियाबाद, दिल्ली तक गंगा जल की आपूर्ति पर सीधा असर पड़ेगा। पानी की सप्लाई बाधित होने से इन क्षेत्रों में पेयजल और सिंचाई से संबंधित जल संकट गहराने की

संभावना है। उधर, अपर नगर आयुक्त और प्रभारी जीएम जल पंकज कुमार के अनुसार गंगा जल की सप्लाई बंद होने को लेकर सभी ट्यूबवेल को लगातार संचालित करने का निर्देश दिया गया है, ताकि शहर के किसी भी इलाके में पानी की समस्या उत्पन्न नहीं हो सके। अधिकारियों का कहना है कि मेरठ के सभी नलकूपों, अवर जलाशयों (पानी की टंकियों) और ट्यूबवेलों को दुरुस्त कराया जा रहा है। वे पूरी क्षमता से काम करेंगे। जिले के जिन क्षेत्रों में वॉटर सप्लाई लाइन या अन्य वैकल्पिक व्यवस्था नहीं है, वहां पर टैंकरों के जरिए पानी पहुंचाया जाएगा। इस दौरान पानी सप्लाई व्यवस्था से जुड़े सभी कर्मचारियों को मुस्तेद रहकर बैकअप व्यवस्था मजबूत रखने का आदेश दिया गया है। गंगाजल सप्लाई करीब 18 दिन बंद रहेगी। यह त्योहारी सीजन है। जाहिर है त्योहारी सीजन में घरों की सफा–सफाई और अन्य कामों के लिए पानी की मांग काफी बढ़ जाती है। ऐसे में गंगा जल सप्लाई पर निर्भरता वाले इलाकों में संकट न आए, नगर निगम प्रशासन द्वारा इस दृष्टिकोण से तैयारी की जा रही है। एक्सईएन के अनुसार सिल्ट सफाई से संबंधित किसी भी प्रकार की शिकायत या सुझाव गंग नहर मेरठ खंड के कार्यालय अथवा दूरभाष संख्या 0121–2663598 पर कार्यालय अवधि दिए जा सकते हैं।

महीने में एक बार फांसीघर क्यों जाते हैं पवन जल्लाद क्या बदली जाएगी मुस्कान-रविता की जेल

लखनऊ। बहुचर्चित नीला ड्रम कांड यानी सौरभ राजपूत हत्याकांड में मुस्कान रस्तोगी और साहिल शुक्ला और सांप कांड यानी अमित हत्याकांड में रविता और अमरदीप को फांसी की सजा सुनाए जाने के बाद पवन जल्लाद ने कहा है कि यदि जेल प्रशासन की ओर से उन्हें बुलाया जाता है और जिम्मेदारी सौंपी जाती है तो वह फांसी देने के लिए तैयार हैं। पवन जल्लाद महीने में एक बार मेरठ जेल जाते हैं। जेल अधिकारियों ने बताया कि वह फांसीघर को चेक करते हैं और वापस लौट जाते हैं। उधर, मुस्कान और रविता अब कानूनी लड़ाई लड़ने की तैयारी कर रही हैं। दोनों ने निचली अदालत के फैसले को चुनौती देने को निजी वकील की मांग की है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार अपील के बाद बंदियों को दूसरी जेलों में भेजने की प्रक्रिया शुरू होगी। पुरुष बंदियों को आगरा सेंट्रल जेल भेजा जाता है, जबकि महिला बंदियों को लखनऊ स्थित नारी निकेतन भेजने की व्यवस्था है। उनका कहना है कि बंदियों को भेजने के लिए वहां उपलब्ध सीटों और क्रम का ध्यान रखा जाएगा। सीटें खाली होने पर उन्हें बारी–बारी से शिफ्ट किया जाएगा। फिलहाल चारों दोषियों की अपील की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। वरिष्ठ जेल अधिकक्ष जे. वीरेश राज शर्मा के अनुसार, दोनों के आवेदन पर निजी वकील उपलब्ध कराने की प्रक्रिया की जाएगी। पति सौरभ की हत्या के मामले में मुस्कान और उसके साथी साहिल को अदालत ने मृत्युदंड की सजा सुनाई है। वहीं,



पति अमित को सांप से डसवाकर हत्या कराने के मामले में रविता और उसके प्रेमी अमरदीप को भी अदालत ने फांसी की सजा सुनाई है। सजा सुनाए जाने के बाद अब दोनों मामलों में आगे की कानूनी प्रक्रिया पर नजर है। पवन जल्लाद के परिवार में कई पीढ़ियों से फांसी देने का काम होता आ रहा है। उनके परदादा लक्ष्मण, दादा कालू राम

और पिता मम्मू भी जल्लाद थे। अब वह इस पारिवारिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा है कि वह अपने बेटे को भी इस काम की ट्रेनिंग देंगे ताकि अगली पीढ़ी भी इस पेशे को आगे बढ़ा सके। दिल्ली में दिसंबर 2012 में हुए निभया सामूहिक दुष्कर्म और हत्याकांड के चार दोषियों मुकेश सिंह, पवन गुप्ता, विनय शर्मा और अक्षय कुमार सिंह को

थप्पड़ कांड के पीड़ित मुस्लिम छात्र को ढाई साल बाद राहत, पढ़ाई का खर्च उठाने को आगे बढ़ी सरकार

लखनऊ। यूपी के मुजफ्फरनगर के चर्चित थप्पड़ कांड के पीड़ित मुस्लिम छात्र को राहत मिलने जा रही है। उसकी शिक्षा, ड्रेस, पाठ्य–सामग्री और यातायात के खर्च की पूरी जिम्मेदारी अब उत्तर प्रदेश शासन ने अपने हाथों में ले ली है। घटना के लगभग ढाई साल बाद सुप्रीम कोर्ट के कड़े निर्देशों के अनुपालन में राज्य सरकार ने छात्र की शिक्षा और अन्य जरूरतों के लिए 1.38 लाख की एकमुश्त धनराशि जारी कर दी है। इस सरकारी बजट के स्वीकृत होने से बेसिक शिक्षा विभाग, स्कूल प्रशासन को भी बड़ी राहत मिली है। मंसूरपुर के गांव खुब्बापुर में साल 2023 में नेहा पब्लिक स्कूल में पढ़ने वाले छात्र को प्रधानाचार्या ने दूसरे छात्र से थप्पड़ लगावा थे। इसका वीडियो भी सामने आया था। इसके बाद यह प्रकरण सोशल मीडिया के जरिए वायरल हुआ। घटना के बाद पीड़ित छात्र का दाखिला शहर के नामवीन शिक्षण संस्थान शारदेन स्कूल में तत्कालीन बीएसए शुभम शुक्ला ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर कराया था। शुरुआती चरण में छात्र के पठन–पाठन और अन्य व्यवस्थाओं का खर्च बेसिक शिक्षा विभाग अपने स्तर से वहन कर रहा था। इसके बाद छात्र की स्कूल फीस का जिम्मा सैय्यद मर्तुजा मेमोरियल ट्रस्ट ने लिया था। हालांकि, ट्रस्ट की ओर से समय पर फीस जमा न किए जाने के कारण असमंजस की स्थिति बन गई थी। बीएसए संदीप कुमार ने बताया कि शासन को पत्र भेजकर विशेष बजट की मांग की गई थी। शासन से अब 1.38 लाख की राशि सीधे मंजूर कर दी गई है,

बेटी की सहेली से शादी करूंगा बोले 75 साल के रामसुघर; स्वांग बताने वालों को चेतावनी भी दी

लखनऊ। अपनी उम्र से 45 साल छोटी रानी से सगाई करने वाले 75 साल के रामसुघर से सोमवार रात एक वीडियो जारी कर उन खबरों का खंडन किया जो इसे फॉलोअर्स बढ़ाने का स्वांग बता रहे हैं। रामसुघर ने बताया कि वह शादी कर रहे हैं फॉलोअर बढ़ाने की कोशिश बताते हुए झूठ फैलाया जा रहा है। रामसुघर का बयान अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

औरैया जिले के सहार क्षेत्र के अरियारी गांव के रहने वाले रामसुघर के सगाई और हल्दी की रस्म वाले वीडियो चार दिन पहले सोशल मीडिया खूब वायरल हुए थे।

इनमें वह बेटी की सहेली 30 वर्षीया रीना के साथ सगाई और हल्दी के कार्यक्रम करते हुए दिख रहे हैं। बातचीत के दौरान रामसुघर ने नवरात्र बाद शादी करने की बात भी कही थी। वहीं, सोमवार को सोशल मीडिया पर वायरल कुछ वीडियो में इसे फॉलोअर्स बढ़ाने के लिए रचा गया स्वांग

बताया। इस पर रामसुघर ने देर रात 40 सेकंड का एक वीडियो वायरल कर इसे अफवाह बताया। उन्होंने कहा कि वह विवाह कर रहे हैं जो लोग इसे स्वांग बता रहे हैं, उनकी शिकायत पुलिस से करेंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रानी और रामसुघर केबीच लव स्टोरी की शुरुआत सोशल मीडिया पर रील बनाने से हुई।

गौरतलब है कि रानी, रामसुगर की बेटी की सहेली हैं। रामसुमेर की बेटी इंस्टाग्राम और दूसरे सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर वीडियो बनाकर पोस्ट करती हैं। इसी सिलसिले में अक्सर रानी उसके घर आया–जाया करती थीं।

इसी दौरान रामसुघर और रानी एक–दूसरे के करीब आ गए। दोनों के बीच मोहब्बत कब पैदा हो गई किसी को पता ही नहीं चला। सबकि नजरी से छिप–छिपाकर दोनों का प्यार परवान चढ़ता रहा और आखिरकार दोनों ने शादी करने का फैसला लिया।

श्रद्धा दुबे को 9 हजार सीसीटीवी और 1461 एआई कैमरे पकड़ नहीं पाए, लखनऊ घूमकर निकल गई मॉडल

लखनऊ। लखनऊ में कारोबारी शिवा शर्मा की हत्यारोपी मॉडल श्रद्धा पुलिस के हाईटेक जाल को चकमा दे रही। स्मार्ट सिटी और सेफ सिटी के तहत लगे नौ हजार सीसीटीवी और 1461 एआई कैमरों के बावजूद वह पकड़ में नहीं आई। श्रद्धा बाईर पर सुरक्षार्कर्मियों को चकमा देकर नेपाल पहुंची। वहां तीन बांके और सुखेंत और नेपालगंज में ठिकाने बदलती रही। फिर बाँइर पर दोनों देशों की सुरक्षा एजेंसियों को भी उसने चकमा देकर वापस लखनऊ लौट आई, लेकिन पुलिस की गिरफ्त से दूर रही। बताया जा रहा है कि श्रद्धा नेपाल बाईर से गोरखपुर और फिर रायबरेली पहुंची थी। वहां से लखनऊ पहुंची। शहर में कई जगह उसका मूवमेंट हुआ। उसके मददगार सक्रिय रहे है। इस दौरान शहर के प्रमुख मार्गों पर स्मार्ट सिटी और सेफ



सिटी परियोजना के तहत लगे एआई आधारित उच्चस्तरीय तकनीकी वाले चरों, दुकानों व मार्गों पर लगे सीसी कैमरे खोज नहीं सके। इन कैमरों की मॉनिटरिंग के लिए बने कंट्रोल रूम में हर समय वाहनों और रूट से निकलने वाले लोगों की निगरानी होती है। इसके बाद भी श्रद्धा निकल गई। नौ हजार

कैमरों के जाल से भगोड़ी का निकल जाना स्मार्ट सिटी के दावों और पुलिस की कार्यप्रणाली पर बड़ा सवाल खड़ा कर रहा है। शहर के 155 चौराहों पर आईटीएमएस के कैमरे लगे हैं। चौराहों में भी पीटीजेड कैमरे लगे हैं। कैमरों की मदद से कई वाहन चोरों और बदमाशों को पूर्व में पकड़ा भी गया। यह कैमरे

श्रद्धा की निगरानी नहीं कर सके। पुलिस के तंत्र पर यह भी एक बड़ा सवाल है। सूत्रों के मुताबिक इन प्रमुख चौराहों में कई से श्रद्धा की कार गुजरी थी। पुलिस ने शहर में श्रद्धा को पनाह देने और कई मददगारों को चिह्नित किया है। बताया जा रहा है कि कई को हिरासत में भी ले लिया गया है। उनसे पृष्ठताछ की जा रही है। उनके काल डिटेल और सोशल मीडिया अकाउंट खगाले जा रहे हैं। इसके अलावा नेपाल से लेकर बाईर तक श्रद्धा की मदद ककरने वाले कई लोग भी पुलिस की रछार पर हैं। पुलिस उनका ब्योरा जुटा रही है। लखनऊ में बालू अड्डा स्थित अवध ग्रीन अपार्टमेंट के चौथे तल से संदिग्ध हालात में गिरकर रात चिकन कारोबारी व कैफे संचालक शिवा शर्मा की मौत हो गई थी। शिवा अलीगंज कपूथला में रहते थे।

यूपी चुनाव से पहले बदलेंगे कांग्रेस के जिला और शहर अध्यक्ष, ऐलान जल्द

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस बड़ा फेरबदल करने वाली है। यूपी के कई जिलों में कांग्रेस के जिलाध्यक्ष और शहर अध्यक्ष बदले जाएंगे। पार्टी के जिला और शहर अध्यक्षों पर चर्चा आखिरकार सोमवार को पूरी हो गई। यूपी कांग्रेस प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष आराधना मिश्रा मोना और प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष इमरान मसूद ने देर शाम कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा से मुलाकात की। सूत्रों के मुताबिक प्रियंका गांधी से जिला और शहर अध्यक्ष बदले जाने पर विस्तार से बात हुई है। इसके अलावा विधानसभा चुनाव पर भी विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई है। यूपी कांग्रेस प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम पहले भी कह चुके हैं कि सपा से इसी सप्ताह से गठबंधन पर बातचीत शुरू होगी। लिहाजा कयास लगाए जा रहे हैं कि उस संबंध में भी प्रियंका गांधी से मशविरा हुआ होगा। राजेंद्र बुधवार को लखनऊ आयेंगे। ऐसे में उमीद है कि इस समय उनकी गठबंधन के मसले पर सपा नेताओं से मुलाकात हो। इमरान ने कहा कि अभी बातचीत का शुरुआती चरण शुरू होगा। हमें उम्मीद है कि गठबंधन मजबूती से चुनाव लड़ेगा और सरकार बनाएगा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष आराधना मिश्रा मोना ने प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष इमरान मसूद के साथ नई दिल्ली में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी और यूपी कांग्रेस प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम से मुलाकात की। उन्होंने इसकी एक तस्वीर भी ‘एक्स’ पर पोस्ट की है। एक अन्य पोस्ट में यूपी कांग्रेस की अध्यक्ष आराधना मिश्रा मोना ने लोगों ने विजयदशमी की शुभकामनाएं दीं। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष आराधना मिश्रा मोना ने ‘एक्स’ पर लिखा– ‘बुराई पर अच्छाई और असत्य पर सत्य की विजय का शाश्वत संदेश देने वाले पावन पर्व विजयादशमी की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।



सनी देओल@69 गुस्से में फाड़ी जींस

‘गैस ऑफ वासेपुर’ जैसी कल्ट फिल्में बनाने वाले डायरेक्टर अनुराग कश्यप अपने करियर की शुरुआत में स्ट्रगल कर रहे थे। इसी दौर में उन्हें एक फिल्म डायरेक्ट करने का मौका मिला। अनुराग इस कहानी को लेकर हिंदी सिनेमा के एक दिग्गज एक्टर के पास पहुंच गए। कहानी सुनते ही एक्टर की आंखों में काम करने की चमक लौट आई। उन्होंने कहा, “बेटा, बहुत समय हो गया है मेरे मुंह पर मेकअप नहीं लगा। बहुत अच्छी कहानी है तुम्हारी, करते हैं।” दिग्गज एक्टर के साथ काम करना अनुराग के लिए किसी सपने के सच होने जैसा था, लेकिन तभी कहानी में एक ट्विस्ट आया। एक्टर के बेटे को पता चला कि फिल्म के आखिर में उसके पिता के किरदार की मौत हो जाती है। उसने तुरंत अपने पिता को फिल्म करने से मना कर दिया।

बचपन में धर्मेंद्र के को-एक्टर को गोली मारने निकले साल था 1961 और सनी देओल महज 4 साल के थे। एक दिन उनके घर पर ऐसा शख्स पहुंचा, जिसे देखकर नन्हें सनी को गुस्सा आ गया। उन्होंने एयर गन उठाई और पूरे घर में घूमने लगे।

जब मां प्रकाश कौर ने पूछा कि आखिर वह कर क्या रहे हैं, तो सनी गुस्से में बोले, “मैं इसे गोली मारूंगा। इसने मेरे पापा को मारा था।”

दरअसल, सनी ने अपने पिता धर्मेंद्र की 1961 में आई फिल्म ‘शोला और शबनम’ देखी थी। फिल्म में अभिनेता एम. राजन ने धर्मेंद्र के किरदार के साथ मारपीट की थी। नन्हें सनी के मन में यह बात बैठ गई कि इस शख्स ने उनके पापा को मारा है। उन्हें यह समझ नहीं आया कि पर्दे पर दिखने वाली लड़ाई सिर्फ एक्टिंग थी।

संयोग से कुछ समय बाद एम. राजन असल ज़िंदगी में धर्मेंद्र से मिलने मुंबई के खार स्थित उनके घर



पहुंचे। उन्हें देखते ही सनी को फिल्म वाला वही सीन याद आ गया।

झाड़वर की गोदी में बैठकर कार चलाते थे

सनी देओल बचपन से ही काफी शरारती थे। उन्हें गाड़ियां चलाने का इतना शौक था कि महज 12-13 साल की उम्र में ही उन्होंने चोरी-छिपे कार चलानी शुरू कर दी थी।

शुरुआत में वे झाड़वर की गोदी में बैठकर ही कार चलाते थे।

सनी ने ‘आप की अदालत’ जैसे कई इंटरव्यू में यह बताया कि जब घर के सभी लोग सो जाते थे, तो वे चुपके से गाड़ी की चाबी उठाते और गाड़ी लेकर निकल जाते थे। इस दौरान उन्होंने कई बार गाड़ियों को टक्कर भी मार दी थी।

मैशेबल इंडिया को दिए एक इंटरव्यू में सनी ने बताया था कि वह अपनी कार में तलवारें, धातु की छड़ें और हॉकी स्टिक रखते थे।

सनी देओल के पैर में रॉड घुस गई थी: दमदार डायलॉग और एक्शन के लिए मशहूर सनी की असल ज़िंदगी में भी कई बार लड़ाइयां हुईं। सनी की एक लड़ाई इतनी खतरनाक थी कि वह अकेले कई लोगों से थिड़ गए थे और उन पर रॉड से हमला हुआ था।

सनी ने रणवीर अल्लाहबादिया के पॉडकास्ट पर बताया था कि एक लड़ाई में उनके पैर में रॉड घुस गई थी। यह लड़ाई ईंगो की वजह से शुरू हुई थी। उस वक्त वह अकेले लड़ रहे थे,



फाल्गुनी पाठक की गरबा नाइट में आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ ने जमाया रंग

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता आयुष्मान खुराना और अभिनेत्री शरवरी वाघ इन दिनों अपनी आगामी फिल्म ‘ये प्रेम मोल लिया’ को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में दोनों सितारे मुंबई में आयोजित मशहूर सिंगर फाल्गुनी पाठक की गरबा नाइट में शामिल हुए। यहां दोनों ने फाल्गुनी पाठक के साथ गरबा कर नवरात्रि के उत्सव को और भी खास बना दिया। इस दौरान फिल्म के गाने ‘जय अंबे बोल’ की धूम

देखने को मिली। कार्यक्रम की तस्वीरें और वीडियो सामने आने के बाद प्रशंसकों के बीच भी इस खास जश्न को लेकर उत्साह नजर आया। कार्यक्रम की शुरुआत भक्ति और आस्था के साथ हुई। आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ ने मां दुर्गा के दरबार में पहुंचकर पूजा-अर्चना की और आशीर्वाद लिया। दोनों सितारे पारंपरिक परिधानों में नजर आए। पूजा के बाद वे गरबा नाइट के मंच पर पहुंचे, जहां

मौजूद दर्शकों ने उनका उत्साह के साथ स्वागत किया। इसके बाद दोनों कलाकारों ने गरबा क्वीन फाल्गुनी पाठक के साथ डांस किया। नवरात्रि के रंग में रंगे इस कार्यक्रम में संगीत, भक्ति और बॉलीवुड का शानदार मेल देखने को मिला। इस गरबा नाइट का खास आकर्षण फिल्म ‘ये प्रेम मोल लिया’ का गाना ‘जय अंबे बोल’ रहा। नवरात्रि के उत्सव को ध्यान में रखकर तैयार किया गया यह गाना

अपनी जोशीली धुन और गरबा की लय के कारण चर्चा में है। आयुष्मान और शरवरी ने फाल्गुनी पाठक के साथ इस गाने की सफलता का जश्न मनाया। फाल्गुनी पाठक को नवरात्रि के दौरान गरबा प्रस्तुतियों के लिए खास पहचान मिली है। ऐसे में उनके साथ फिल्म के मुख्य कलाकारों का मंच साझा करना फिल्म के प्रमोशन के लिहाज से भी महत्वपूर्ण रहा।



मैं खुद को असुरक्षित महसूस कर रही थी: अंजलि

‘कच्चा बादाम’ गाने को लेकर बताई सच्चाई

सोशल मीडिया पर ‘कच्चा बादाम’ गाने से लोकप्रिय हुई अंजलि अरोड़ा एक बार फिर सुर्खियों में हैं। कानपुर में आयोजित डांडिया नाइट कार्यक्रम को बीच में छोड़कर जाने के बाद अभिनेत्री और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर को लेकर विवाद खड़ा हो गया था। अब अंजलि ने इस पूरे मामले पर अपनी चुप्पी तोड़ते हुए सफाई दी है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के दौरान वह खुद को असुरक्षित महसूस कर रही थीं। उनके मुताबिक, मामला सिर्फ ‘कच्चा बादाम’ गाना बजने का नहीं, बल्कि उनकी सुरक्षा और कार्यक्रम में हुए कथित दुर्व्यवहार का था।

● **क्या है पूरा मामला ?**

दरअसल, 15 अक्टूबर को कानपुर के मोतीझील स्थित लाजपत भवन में ‘नगाड़ा नाइट डांडिया’ कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में अंजलि अरोड़ा भी शामिल हुई थीं। कार्यक्रम के दौरान डीजे पर उनका चर्चित गाना ‘कच्चा बादाम’ बजने लगा। इसके बाद अंजलि डीजे की ओर जाती और आयोजन से जुड़े लोगों के सामने नाराजगी जताती नजर आईं। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद लोगों ने तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं दीं। कुछ लोगों ने आरोप लगाया कि अंजलि उस गाने को बजाए जाने से नाराज थीं, जिसने उन्हें पहचान दिलाई थी। वहीं, अब अंजलि ने अपने बयान में इस विवाद के पीछे सुरक्षा संबंधी चिंताओं का हवाला दिया है।

● **होटल के कमरे में लोगों के आने का लगाया आरोप**

अंजलि ने अपने वीडियो में आरोप लगाया कि होटल में उनके कमरे में एक वेटर के साथ कई पुरुष आ गए थे और उन्हें बार-बार परेशान किया जा रहा था। उनके अनुसार, इन घटनाओं के कारण वह असहज हो गई थीं और उन्हें अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता होने लगी थी। अंजलि ने स्पष्ट किया कि उनकी नाराजगी को केवल गाने से जोड़कर देखना सही नहीं है। उन्होंने कार्यक्रम के आयोजकों के आरोपों पर भी सवाल उठाए और उनसे अपने दावों के समर्थन में सबूत पेश करने की चुनौती दी। हालांकि, होटल में हुई कथित घटना और उससे जुड़े आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि उपलब्ध रिपोर्टों से नहीं होती है।

आयोजकों ने भी लगाए आरोप

दूसरी ओर, कार्यक्रम के आयोजकों ने अंजलि के अचानक कार्यक्रम छोड़कर जाने पर नाराजगी जताई थी। आयोजकों का आरोप था कि अंजलि ने निर्धारित समय तक प्रस्तुति नहीं दी, जिससे कार्यक्रम प्रभावित हुआ। इस मामले में आयोजकों की ओर से पुलिस में शिकायत किए जाने की भी खबर सामने आई। इस तरह पूरे घटनाक्रम में दोनों पक्षों के दावे सामने आए हैं। जहां आयोजक अंजलि के कार्यक्रम छोड़ने पर सवाल उठा रहे हैं, वहीं अंजलि ने अपनी सुरक्षा और आयोजन की व्यवस्थाओं को लेकर गंभीर चिंताएं जाहिर की हैं। इन आरोपों पर अंतिम निष्कर्ष निकालने से पहले तथ्यों की पुष्टि जरूरी है।

● **प्रशंसकों से मांगी माफी:** अंजलि ने कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे प्रशंसकों से भी माफी मांगी। उन्होंने अपने वीडियो के जरिए यह बताने की कोशिश की कि उनका उद्देश्य दर्शकों को निराश करना नहीं था, बल्कि परिस्थितियों के चलते उन्हें वहां से जाने का फैसला लेना पड़ा। फिलहाल, कानपुर डांडिया नाइट का यह मामला सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है। अंजलि के बयान के बाद विवाद को एक नया मोड़ मिल गया है। अब इस मामले में आयोजकों और अंजलि की ओर से सामने आए दावों के बीच वास्तविक स्थिति स्पष्ट होने का इंतजार है।

पवन सिंह ने भरे मंच से अक्षरा सिंह से मांगी माफी बोले- ‘अक्षरा मेरा बाबू है’, पत्नी ज्योति सिंह ने दिया ऐसा रिएक्शन

भोजपुरी सिनेमा के पावर स्टार पवन सिंह एक बार फिर अपनी निजी ज़िंदगी को लेकर चर्चा में हैं। अभिनेत्री और गायिका अक्षरा सिंह के साथ लंबे समय से चले आ रहे विवाद के बीच पवन सिंह ने सार्वजनिक मंच से उनसे माफी मांगी है। बिहार के मुंगेर में आयोजित दुर्गा महोत्सव के दौरान पवन सिंह ने अक्षरा को अपना बाबू और बेटा बताते हुए उनके माता-पिता से भी माफी मांगी। इस घटनाक्रम के बाद उनकी पत्नी ज्योति सिंह की सोशल मीडिया पोस्ट भी सुर्खियों में आ गई है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुंगेर जिले के कल्याणपुर स्थित बड़ी दुर्गा महारानी मंदिर में आयोजित दुर्गा महोत्सव में पवन सिंह प्रस्तुति देने पहुंचे थे। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने अक्षरा सिंह के गानों का भी जिक्र किया। इसी बीच उन्होंने माइक संभालकर अक्षरा और उनके परिवार के प्रति अपनी भावनाएं जाहिर कीं।

पवन सिंह ने कहा, “अक्षरा सिंह मेरा बाबू है, मेरा बेटा है। उनके पिताजी हमारे भैया हैं और उनकी माताजी हमारी भाभी



हैं।” उन्होंने आगे कहा कि अगर उनकी किसी बात या व्यवहार से अक्षरा के माता-पिता को बुरा लगा हो, तो वह दिल से माफी मांगते हैं और उन्हें प्रणाम करते हैं।

पवन सिंह की इस बात पर कार्यक्रम में मौजूद दर्शकों ने तालियां बजाईं। उनका वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आने के बाद भोजपुरी मनोरंजन जगत में एक बार फिर दोनों

के रिश्ते की चर्चा शुरू हो गई।

फैंस से पूछा- क्या फिर साथ देखना चाहते हैं ?

अक्षरा सिंह से माफी मांगने के बाद पवन सिंह ने वहां मौजूद प्रशंसकों से यह भी पूछा कि क्या वे दोनों को फिर से एक साथ पर्दे पर देखना चाहते हैं। दर्शकों ने इस पर उत्साह दिखाया।

पवन सिंह ने कहा कि अगर प्रशंसक चाहते हैं, तो यह जोड़ी बहुत जल्द एक साथ नजर आ सकती है। उनके इस बयान से दोनों कलाकारों के दोबारा साथ काम करने की संभावनाओं को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। हालांकि, अभी दोनों की किसी आगामी फिल्म या प्रोजेक्ट को लेकर आधिकारिक घोषणा सामने नहीं आई है।

ज्योति सिंह की पोस्ट ने खींचा ध्यान

पवन सिंह के इस बयान के बाद उनकी पत्नी ज्योति सिंह की सोशल मीडिया पोस्ट भी चर्चा का विषय बन गई। रिपोर्ट्स के अनुसार, ज्योति ने इंस्टाग्राम पर ‘वाह रे राजपूताना स्वाभिमान’ लिखकर अपनी प्रतिक्रिया दी।

जानबूझकर बनाती हूं विवादित गाने: नेहा

बॉलीवुड की मशहूर सिंगर नेहा कक्कड़ एक बार फिर अपने गानों को लेकर चर्चा में हैं। अपने गानों के बोल और डांस स्टेप्स को लेकर अक्सर सोशल मीडिया पर ट्रोल होने वाली नेहा ने अब इस आलोचना पर खुलकर बात की है। उन्होंने स्वीकार किया कि वह जानबूझकर ऐसे गाने बनाती हैं, जिनको लेकर विवाद होने की आशंका रहती है। नेहा का कहना है कि इन गानों पर लोग आलोचना तो करते हैं, लेकिन पार्टियों में इन्हीं पर जमकर डांस भी करते हैं।

‘हमें पता है कि लोग ट्रोल करेंगे: एक रिपोर्ट के मुताबिक, करीना कपूर के पॉडकास्ट मिर्ची प्लस पर बातचीत के दौरान नेहा कक्कड़ ने अपने विवादित गानों को लेकर अपनी सोच जाहिर की। उन्होंने कहा कि अब उन्हें पता चल गया है कि ‘बारह लड़के साथ घूमे’ जैसे गाने बनाने पर लोग उन्हें ट्रोल करेंगे। इसके बावजूद वह ऐसे गाने बनाती रहती हैं, क्योंकि लोग इन पर खूब नाचते हैं।

नेहा के मुताबिक, एक तरफ लोग सोशल मीडिया पर उनके गानों की आलोचना करते हैं, वहीं दूसरी तरफ इन्हें अपनी पार्टियों में बजाते भी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लोग व्यूज पाने के लिए इन गानों को लेकर ट्रोलिंग करते हैं, लेकिन इसके बावजूद ऐसे गाने लोकप्रिय होते हैं।

‘कैडी शॉप’ को लेकर हुआ था विवाद: नेहा कक्कड़ और उनके भाई टोनी कक्कड़ का गाना ‘कैडी शॉप’ रिलीज होने के बाद सोशल मीडिया पर काफी

चर्चा में रहा था। गाने के वीडियो, बोल और डांस स्टेप्स को लेकर कई यूजर्स ने सवाल उठाए थे। कुछ लोगों ने इसे जरूरत से ज्यादा बोल्ड और आपत्तिजनक बताया, जबकि कुछ ने इसके अंदाज की आलोचना की। गाने को लेकर हुई इस ट्रोलिंग के बाद अब नेहा का बयान एक बार फिर चर्चा का विषय बन गया है। उनके मुताबिक, आलोचना की आशंका के बावजूद वह ऐसे गाने बनाती हैं, क्योंकि दर्शक इन पर मनोरंजन करते हैं और डांस करना पसंद करते हैं।

करीना कपूर के पॉडकास्ट में सिंगर ने बताई अपने गानों के पीछे की रणनीति

अलग-अलग तरह के संगीत में करना चाहती हैं प्रयोग: नेहा ने बातचीत में यह भी बताया कि वह संगीत की अलग-अलग शैलियों को आजमाना चाहती हैं और विभिन्न तरह के दर्शकों तक पहुंचना चाहती हैं। उनके अनुसार, संगीत में नए प्रयोग करना उनके काम का हिस्सा है। हालांकि, उनके गानों को लेकर लोगों की राय बंटी हुई है। कुछ प्रशंसक उनके प्रयोगों को पसंद करते हैं, जबकि कुछ श्रोता गानों के बोल और प्रस्तुति पर सवाल उठाते हैं। ऐसे में नेहा का यह बयान मनोरंजन जगत में संगीत की लोकप्रियता, सोशल मीडिया ट्रोलिंग और दर्शकों की पसंद के बीच संबंध को लेकर कई बहस छेड़ सकता है।

टीवी पर रोजे को लेकर भी कही बात: नेहा कक्कड़ ने बातचीत के दौरान टेलीविजन पर भावुक होने और रोजे को लेकर होने वाली चर्चाओं पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने बताया कि कई लोग उनसे मिलकर कहते हैं कि उन्हें भावुक होते देखकर अपनी बेटी की याद आती है।

नेहा के मुताबिक, उनकी भावनात्मक छवि से कई दर्शक खुद को जोड़ पाते हैं। इस तरह सिंगर ने अपने संगीत के साथ-साथ अपनी सार्वजनिक छवि को लेकर होने वाली चर्चाओं पर भी खुलकर जवाब दिया।

फिलहाल, नेहा कक्कड़ का बयान एक बार फिर सुर्खियों में है। विवादों के बीच उनका कहना है कि वह जानती हैं कि उनके कुछ गानों की आलोचना होगी, लेकिन अगर लोग उन पर नाचते हैं और उनका आनंद लेते हैं, तो वह ऐसे संगीत के साथ प्रयोग करना जारी रखेंगी।

डेलनाज दारूवाला के प्यार में पड़े ‘सप्लिड्सविला’ फेन सौरब बेदी



रियलिटी शो ‘एमटीवी सप्लिड्सविला X6’ से चर्चा में आए सौरब बेदी इन दिनों अपनी निजी ज़िंदगी को लेकर सुर्खियों में हैं। मॉडल और रियलिटी टीवी स्टार सौरब ने डेलनाज दारूवाला के साथ अपनी कुछ रोमांटिक तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं, जिसके बाद दोनों के रिश्ते को लेकर चर्चाएं तेज हो गईं। खास बात यह है कि मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, डेलनाज उम्र में सौरब से करीब 24 साल बड़ी हैं।

सोशल मीडिया पर शेयर कीं रोमांटिक तस्वीरें

रिपोटर्स के अनुसार, सौरब बेदी ने 16 अक्टूबर को अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर डेलनाज दारूवाला के साथ कई तस्वीरें साझा की थीं। इन तस्वीरों में दोनों एक-दूसरे के करीब नजर आए। कुछ तस्वीरों में दोनों के रोमांटिक पल दिखाई दिए, जबकि अन्य तस्वीरों में वे घूमते और मंदिर में दर्शन करते नजर आए। तस्वीरों के साथ सौरब ने मजाकिया अंदाज में लिखा, ‘इज्जत से कमेट करना, तुम्हारी भाभी हैं।’ उनके इस कैप्शन को सोशल मीडिया यूजर्स ने डेलनाज के साथ अपने रिश्ते को सार्वजनिक करने के संकेत के तौर पर देखा।

24 साल के उम्र के अंतर पर छिड़ी चर्चा: सौरब और डेलनाज की तस्वीरें सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर उनके बीच उम्र के अंतर को लेकर बहस शुरू हो गई। जहां कुछ लोगों ने दोनों के रिश्ते का समर्थन किया, वहीं कई यूजर्स ने इस पर टिप्पणियां भी कीं। उम्र के अंतर को लेकर हुई ट्रोलिंग के चलते यह मामला मनोरंजन जगत में चर्चा का विषय बन गया।

तस्वीरें हटाने पर सौरब ने दी सफाई: तस्वीरें साझा करने के कुछ ही घंटों बाद सौरब के सोशल मीडिया अकाउंट से ये पोस्ट नजर आना बंद हो गई। शुरुआत में इसे लेकर कई तरह के कयास लगाए गए। हालांकि, बाद में मीडिया रिपोर्ट्स में सौरब के हवाले से बताया गया कि उन्होंने तस्वीरें डिलीट नहीं, बल्कि आर्काइव की थीं। उन्होंने ऐसा डेलनाज को ऑनलाइन ट्रोलिंग से बचाने के लिए किया। सौरब ने उम्र के अंतर पर उठ रहे सवालों का जवाब देते हुए डेलनाज के प्रति अपनी पसंद और भावनाएं भी जाहिर कीं। उन्होंने यहां तक कहा कि यदि वह चाहें तो डेलनाज से शादी भी कर सकते हैं।

निहारिका तिवारी से भी जुड़ा रहा है नाम: सौरब बेदी का नाम इससे पहले ‘सप्लिड्सविला’ में उनकी साथी रहीं निहारिका तिवारी के साथ भी जुड़ा था। हालिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों अब साथ नहीं हैं। सौरब ने अपने ओपन निहारिका के संबंधों को लेकर भी सफाई दी है और कहा है कि उनके बीच वैसा रोमांटिक रिश्ता नहीं था, जैसा माना जा रहा था। फिलहाल, सौरब बेदी और डेलनाज दारूवाला की जोड़ी अपने उम्र के अंतर और सोशल मीडिया पर वायरल हुई तस्वीरों के कारण चर्चा में है। दोनों के रिश्ते और भविष्य को लेकर प्रशंसकों की दिलचस्पी बनी हुई है।

गौरव पूर्ण भारत



एक नज़र

अजीत अगरकर की जगह रमेश पवार आए, फिर प्रज्ञान ओझा क्यों बने बीसीसीआई चीफ सिलेक्टर

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने सोमवार को बड़ी घोषणा करते हुए यह जानकारी साझा की है कि सानियर पुरुष चयन समिति के लिए अजीत अगरकर के जाने के बाद खाली हुआ पद भर लिया गया है। अजीत अगरकर की जगह अब रमेश पवार को पश्चिम क्षेत्र से सीनियर सिलेक्शन कमेटी में शामिल किया गया है। हालांकि, रमेश चीफ सिलेक्टर नहीं होंगे, बल्कि यह जिम्मेदारी प्रज्ञान ओझा संभालेंगे। अजीत अगरकर की जगह चयन समिति में रमेश पवार की एंट्री हुई है, लेकिन प्रज्ञान ओझा क्यों चीफ सिलेक्टर चुने गए हैं, यह सवाल कई लोगों के दिमाग में होगा। ऐसे में आइए इसके बारे में विस्तार से बताते हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड सीनियर पुरुष चयन समिति के 5 सदस्यों की नियुक्त करता है। इन पांच सदस्यों में से एक को चीफ सिलेक्टर बनाया जाता है। लेकिन यह फैसला कैसे लिया जाता है कि कौन चीफ सिलेक्टर होगा और कौन चार सामान्य चयनकर्ता। क्या यह फैसला चुनाव से होता है? तो इसका जवाब है नहीं। यह फैसला चुनाव या सदस्यों की वोटिंग से नहीं, बल्कि वरिष्ठता यानी सीनियरटी के आधार पर होता है। बीसीसीआई चयनकर्ता पद के लिए क्रिकेटर को ही चुनती है। चयन समिति का अध्यक्ष बनाने के लिए यह नियम है कि 5 सदस्यों में से जो खिलाड़ी सबसे अधिक अंतरराष्ट्रीय या टेस्ट मैच खेला होगा, उसे ही चयन समिति का अध्यक्ष या सामान्य भाषा में चीफ सिलेक्टर बनाया जाएगा। ज्यादा टेस्ट खेलने वाले प्लेयर को प्राथमिकता दी जाती है। मौजूदा समय में प्रज्ञान ओझा को ही चयन समिति का अध्यक्ष इसलिए चुना गया है क्योंकि उन्होंने पांच सदस्यों की कमेटी में सबसे अधिक टेस्ट मैच खेले हैं। ओझा ने अपने करियर में 24 टेस्ट मैच खेले हैं। इसके अलावा 18 वनडे और 6 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच भी उन्होंने खेले हैं। बाकी के सदस्यों जिनमें रमेश पवार, शिवसुंदर दास, अजय रात्रा और आरपी सिंह ने ओझा से कम टेस्ट मैच खेले हैं, इस कारण चयन समिति का अध्यक्ष इन चारों को नहीं, बल्कि ओझा को बनाया गया है। रमेश पवार ने भारत के 2 टेस्ट मैच और 31 वनडे मैच खेले हैं। उन्होंने एक भी टी-20 मैच में शिरकत नहीं की है। शिवसुंदर दास ने 23 टेस्ट और 4 वनडे मैच खेले हैं। अजय रात्रा की बात करें तो उन्होंने 6 टेस्ट और 12 वनडे मैच खेले हैं। आरसीपी सिंह ने 14 टेस्ट, 58 वनडे और 10 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं। आरपी सिंह ने प्रज्ञान ओझा से ज्यादा इंटरनेशनल मैच खेले हैं लेकिन भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड टेस्ट मैचों को अधिक तरजीह देता है और प्रज्ञान ओझा के मुकाबले आरसीपी सिंह ने 10 टेस्ट मैच कम खेले हैं। शिवसुंदर दास ने प्रज्ञान ओझा से 1 टेस्ट मैच कम खेला है, जबकि अजय रात्रा ने 16 और रमेश पवार ने 22 टेस्ट मैच कम खेले हैं। प्रज्ञान ओझा का टेस्ट क्रिकेट में प्रदर्शन भी शानदार रहा है।

क्रिक में 28 अक्टूबर को होगा महिला प्रीमियर लीग का ऑक्शन, 146 खिलाड़ियों की लगेगी बोली
नई दिल्ली। महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2027 के लिए खिलाड़ियों की नीलामी 28 अक्टूबर को केरल के कोच्चि में आयोजित की जाएगी। पांचों फेंचाइजी में उपलब्ध 27 स्थानों के लिए 146 खिलाड़ियों की बोली लगाई जाएगी। नीलामी भारतीय समयानुसार शाम 5-30 बजे से शुरू होगी। नीलामी में शामिल खिलाड़ियों में 119 भारतीय खिलाड़ी और 27 विदेशी खिलाड़ी हैं। इनमें से 6 छह खिलाड़ी सहयोगी देशों से हैं। भारतीय खिलाड़ियों में 22 अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके हैं और 97 अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेले हैं। जबकि विदेशी खिलाड़ियों में 14 अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके और 13 अनकैच हैं। इस ऑक्शन के लिए भले ही 146 प्लेयर्स ने अपने नाम रजिस्टर्ड किए हैं और नाम भी सबके पुकारे जाएंगे, लेकिन टीमों के पास उपलब्ध जगह सिर्फ 27 हैं, जिनमें से 20 में भारतीय खिलाड़ियों को खरीदा जाएगा और 7 स्थानों के लिए विदेशी खिलाड़ियों के बीच जंग होगी। इंग्लैंड की बल्लेबाज सोफिया डंकले और ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर सोफी मोलिनवुस ने 50 लाख रुपये की उच्चतम बेस प्राइस दर्ज कराई है। भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज जी कमलيني, बल्लेबाज किरण नवगिरे, ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर हीथर ग्राहम और ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर जेस जोनासेन ने अपनी बेस प्राइस 40 लाख रुपये रखी है। कुल 30 खिलाड़ियों ने 30 लाख रुपये की बेस प्राइज पर नीलामी में ऑक्शन में एंट्री ली है। इससे महिला प्रीमियर लीग के 2027 के लिए टीमों के पास खुद को मजबूत करने के विकल्प ज्यादा हो गए हैं।

पिछले साल की तरह ही यूपी वॉरियर्स 3.65 करोड़ रुपये के सबसे बड़े शेष पर्स के साथ मिनी नीलामी में उतरींगी, जबकि मुंबई इंडियंस और यूपी वॉरियर्स के पास 28 अक्टूबर को कोच्चि में होने वाली नीलामी से पहले पांच फेंचाइजी में सबसे अधिक स्थान भरने बाकी हैं। पांचों टीमों ने कुल 63 खिलाड़ियों को रिटैन किया है, जिनमें 23 विदेशी क्रिकेटर शामिल हैं।

नई दिल्ली

नई दिल्ली। 29 वर्षीय बल्लेबाज चिन्मय सुतार ने इतिहास के पन्नों में अपना दर्ज करवा लिया है। उन्होंने अपना दर्ज करवा लिया है। उन्होंने सोमवार को रणजी ट्रॉफी में 400 रनों का आंकड़ा छूते ही कमाल कर दिया। मिजोरम टीम का हिस्सा चिन्मय ने नागालैंड के खिलाफ रणजी ट्रॉफी प्लेट ग्रुप मैच के दूसरे दिन ऐसा किया। उन्होंने 517 गेंद का सामना करने के बाद नाबाद 400 रन बनाए, जिसमें 46 चौके और सात छक्के शामिल हैं। वह फर्स्ट क्रिकेट इतिहास में 400 रन बनाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज हैं। भाऊसाहेब निंबालकर ने 77 साल पहले रणजी ट्रॉफी में महाराष्ट्र की ओर से काठियावाड़ के

खेल

चिन्मय सुतार ने 400 रन बनाकर मचाया धमाल, ऐसा करने वाले दूसरे भारतीय

खिलाफ नाबाद 443 रन जुटाए थे। निंबालकर ने दिसंबर 1948 में खेली अपनी पारी में 49 चौके और एक छक्का जमाया था। चिन्मय फर्स्ट क्लास क्रिकेट में एक पारी में 400 या उससे अधिक रन बनाने वाले दुनिया के 10वें खिलाड़ी हैं। फर्स्ट क्लास में सबसे बड़ी पारी खेलने का रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज ब्रायन लारा के नाम दर्ज है। उन्होंने जून 1994 में वारविकशायर की तरफ से डरहम के खिलाफ 427 गेंदों में नाबाद 501 रन बनाए थे, जिसमें 62 चौके और 10 छक्के हैं। लारा ने अप्रैल 2004 में वेस्टइंडीज बनाम इंग्लैंड टेस्ट में 582 गेंदों में नाबाद

400 रन जोड़े थे, जिसमें 43 चौके और चार सिक्स हैं। लारा के अलावा ऑस्ट्रेलिया के बिल पोसफोर्ड ने दो बार 400 प्लस रनों की पारी खेली। पोंसफोर्ड ने विक्टोरिया की ओर दिसंबर 1927 में क्वींसलैंड के सामने 437 और 1923 में तस्मानिया के खिलाफ 429 रन बनाए। 501 – ब्रायन लारा वारविकशायर की ओर से बनाम डरहम (जून 1994) 499 – हनीफ मोहम्मद कराची की ओर से बनाम बहावलपुर (जनवरी 1959) 452 – डोनाल्ड ब्रेडमैन न्यू साउथ वेल्स की ओर से बनाम क्वींसलैंड (जनवरी 1930) 443 – भाऊसाहेब निंबालकर महाराष्ट्र की ओर से बनाम

बुधवार 21 अक्टूबर 2026

ऐसा करने वाले दूसरे भारतीय

काठियावाड़ (दिसंबर 1948) 437 – बिल पोसफोर्ड विक्टोरिया की ओर से बनाम क्वींसलैंड (दिसंबर 1927) 429 – बिल पोंसफोर्ड विक्टोरिया की ओर से बनाम तस्मानिया (फरवरी 1923) 428 – आफताब बलुच सिंध की ओर से बनाम बलूचिस्तान (फरवरी 1974) 424 – आर्ची मैकलारेन लंकाशायर की ओर से बनाम समरसेट (जुलाई 1885) 410 – सैम नॉर्थईस्ट ग्लेमोर्गन की ओर से बनाम लीसेस्टरशायर (जुलाई 2022) 405 – ग्राहम हिक वॉर्सेस्टरशायर की ओर से बनाम समरसेट (मई 1988) 400 – ब्रायन लारा वेस्टइंडीज की ओर से बनाम

इंग्लैंड (अप्रैल 2004) 400 – चिन्मय सुतार मिजोरम की ओर से बनाम नागालैंड (अक्टूबर 2026) मिजोरम बनाम नागालैंड मैच की बात करें तो जब चिन्मय 231 रन पर बल्लेबाजी कर रहे थे, तभी आखिरी बल्लेबाज लालरेमपुइया छकछुआक उनके साथ बल्लेबाजी करने के लिए क्रीज पर आए। उस समय मिजोरम का स्कोर 392/9 था। चिन्मय ने उनके साथ दसवें विकेट के लिए 189 रन की दमदार साझेदारी की। इसमें सुतार का योगदान 169 रन का रहा। लालरेमपुइया 14 रन बनाकर नाबाद रहे। मिजोरम ने अपनी पहली पारी 581 के स्कोर पर घोषित की।

77 साल बाद किया ऐतिहासिक कारनामा फिर आई पिता की याद, किया फोन, 400 रन जड़ने वाले चिन्मय ने

नई दिल्ली। रणजी ट्रॉफी प्लेट ग्रुप मुकाबले में सोमवार को न्गालैंड के खिलाफ मिजोरम की ओर से नाबाद 400 रन की ऐतिहासिक पारी खेलने के बाद चिन्मय सुतार अपने पिता राजेश से बात करते समय भावुक हो गए थे। यह भावुकता सिर्फ इसलिए नहीं थी कि वह बीबी निंबालकर (नाबाद 443 रन) के बाद प्रथम श्रेणी क्रिकेट में चौहरा शतक लगाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज बन गए थे बल्कि इसलिए भी थी कि उनके करियर में कई मौकों पर वह इस उपलब्धि के करीब पहुंचकर चूक गए थे और उन्हें निराशाओं का सामना करना पड़ा था। न्गालैंड के सौविमा से पीटीआई से बात करते हुए सुतार ने कहा, हां, 400 रन बनाना बहुत शानदार पहसास था। मुझे लगा कि यह किसी सपने जैसा है।

मुंबई के लिए सात प्रथम श्रेणी मैच खेल चुके राजेश वह पहले व्यक्ति थे जिनके साथ सुतार ने इस यादगार उपलब्धि की खुशी साझा की। उन्होंने कहा, हां, दिन का खेल समाप्त होने के बाद मैंने सबसे पहले अपने पिता को फोन किया। यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी और मैं सबसे पहले यह खुशी अपने पिता के साथ साझा करना चाहता था। शुरुआती दिनों से ही उन्होंने मेरा बहुत साथ दिया है। सुचार ने कहा, जब भी मुझे खेलने का मौका नहीं मिल पाता था तो वह हमेशा मेरे साथ खड़े रहते थे। वह मुझे मजबूत बने रहने और अपनी क्षमताओं पर

चिन्मय सुतार का 400 रन की पारी का सपना इस प्लेयर ने पूरा कराया, रणजी ट्रॉफी इतिहास की हैरतअंगेज साझेदारी

नई दिल्ली। मिजोरम के चिन्मय सुतार ने सोमवार को फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 400 रन बनाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज बनकर इतिहास रच दिया। सुतार ने यह दुर्लभ उपलब्धि यहां नागालैंड के खिलाफ रणजी ट्रॉफी प्लेट ग्रुप मैच के दूसरे दिन हासिल की। इस मुकाम पर पहुंचने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज भाऊसाहेब बाबासाहेब निंबालकर थे, जिन्होंने 1948 में महाराष्ट्र की तरफ से खेलते हुए काठियावाड़ के खिलाफ नाबाद 443 रन बनाए थे। मिजोरम की टीम से जुड़ने से पहले मुंबई की तरफ से विजय हजारो ट्रॉफी खेल चुके सुतार 400 रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने अपनी पारी में 517 गेंद

का सामना करके 46 चौके और सात छक्के लगाए। मिजोरम ने अपनी पहली पारी 581/9 के स्कोर पर घोषित की। सुतार अपने करियर का दूसरा क्लास क्रिकेट मैच खेल रहे हैं। जब सुतार 231 रन पर बल्लेबाजी कर रहे थे, तभी आखिरी बल्लेबाज लालरेमपुइया छकछुआक उनके साथ बल्लेबाजी करने के लिए क्रीज पर आए। उस समय मिजोरम का स्कोर 9 विकेट पर 392 रन था। सुतार ने उनके साथ दसवें विकेट के लिए 189 रन की साझेदारी की। इसमें सुतार का योगदान 169 रन का रहा। लालरेमपुइया 14 रन बनाकर नाबाद रहे। रणजी ट्रॉफी के इतिहास में आखिरी विकेट के लिए यह

तीसरी सबसे बड़ी साझेदारी है। सबसे बड़ी साझेदारी का रिकॉर्ड 233 रन का है, जो दिल्ली के अजय शर्मा (259) और मनिंदर सिंह (78) के नाम है। दोनों ने 1991-92 सीजन में मुंबई के खिलाफ यह साझेदारी की थी। फर्स्ट क्लास क्रिकेट में एक पारी में सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के दिग्गज खिलाड़ी ब्रायन लारा के नाम पर दर्ज है। उन्होंने 1994 में वारविकशर की तरफ से खेलते हुए डरहम के खिलाफ नाबाद 501 रन बनाए थे। फर्स्ट क्लास में 400 या इससे अधिक रन बनाने वाले अन्य बल्लेबाजों में हनीफ मोहम्मद (1959 में कराची के लिए 499 रन), डॉन ब्रेडमैन (1930 में न्यू

साउथ वेल्स के लिए नाबाद 452 रन), बिल पोसफोर्ड (1923 में विक्टोरिया के लिए 429 और 1927 में विक्टोरिया के लिए 437 रन), आफताब बलूच (1974 में सिंध के लिए 428 रन), सैम नॉर्थईस्ट (2022 में ग्लेमोर्गन के लिए नाबाद 410 रन), ग्रीम हिक (1988 में वॉर्सेस्टरशर के लिए नाबाद 405 रन नाबाद) और ब्रायन लारा (2004 में वेस्टइंडीज के लिए नाबाद 400 रन) शामिल हैं। 2026-27 सीजन शुरू होने से पहले सुतार ने मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीसी) से अनापति प्रमाण पत्र (एनओसी) लिया था और पिछले हफ्ते मिजोरम के लिए रणजी ट्रॉफी में डेब्यू किया।

वैभव सूर्यवंशी के साथ न्यूजीलैंड पहुंचा उनका खौफ, कीवी पेसर का आया बड़ा बयान

नई दिल्ली। भारत और न्यूजीलैंड के बीच गुरुवार (22 अक्टूबर) से क्राइस्टचर्च में पांच मैचों की टी20 सीरीज की शुरुआत होने जा रही है। सीरीज से पहले युवा सनसनी वैभव सूर्यवंशी को लेकर काफी चर्चा हो रही है। उन्होंने कम वक्त में अपनी तुफानी बैटिंग से क्रिकेट जगत को हैरान कर दिया है। 15 वर्षीय ओपनर सूर्यवंशी ने आईपीएल में धूम मचाने के बाद टीम इंडिया में एंट्री की। वह अब तक आठ टी20 इंटरनेशनल मैचों में 246 रन बना चुके हैं, जिसमें दो फिफ्टी हैं। सूर्यवंशी को हाल ही में वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू टी20 सीरीज में एक भी मैच खेलने का मौका नहीं मिला था। हालांकि, सूर्यवंशी के फैस तेजें कि वह न्यूजीलैंड में धमाल मचाते हुए नजर आएँ। न्यूजीलैंड के चाहे गेंदबाज जैकब जफ़ी ने सूर्यवंशी को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के दौरान बल्लेबाजी करते हुए देखा है। ऐसे में वह अच्छी तरह वाकिफ हैं कि जब सूर्यवंशी अपनी लय में होते हैं तो गेंदबाजों की किस तरह बरिया़या उधेड़ते हैं। सूर्यवंशी की ताबड़तोड़ बैटिंग करने की खासियत से डफ़ी थोड़े घबराए जरूर हैं लेकिन उन्होंने कहा कि युवा ओपनर के लिए न्यूजीलैंड में अलग तरह की चुनौती होगी। 32 वर्षीय डफ़ी आईपीएल 2026 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) का हिस्सा थे। उन्होंने मंगलवार को प्रेस कॉन्फेंस में सूर्यवंशी के बारे में कहा, वह एक जबरदस्त प्रतिभाशाली खिलाड़ी है। उन्होंने आईपीएल में जमकर गदर काटा। सबसे कमाल की बात यह है कि वह जोरदार तरीके से मारता है और वह ऐसा लगातार करता है। वह हर मैच में 250 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाज कर रहा है और वह बहुत कम मौकों पर चूकता है। सूर्यवंशी ने जुलाई 2026 में इंग्लैंड में इंटरनेशनल डेब्यू किया था, जहां वह धमला मचाने में नाकाम रहे। हालांकि, सूर्यवंशी ने उसके बाद जिम्बाब्वे दौरे पर छोड़ी और प्लेयर ऑफ द सीरीज अवॉर्ड जीता।

सिलेक्टर बनने के लिए पवार समेत 5 लोगों ने दिया था इंटरव्यू, अगर जाफर को चुना जाता तो ऐसा होता

नई दिल्ली। भारत के पूर्व स्पिनर रमेश पवार को सोमवार को राष्ट्रीय पुरुष सीनियर चयन समिति में शामिल किया गया जबकि प्रज्ञान ओझा पैनल के अध्यक्ष बने रहेंगे। ओझा ने अजित अगरकर की जगह ली है जिनका कार्यकाल चार अक्टूबर को समाप्त हो गया था। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने कहा कि अंतरिम प्रमुख ओझा वरिष्ठता (टेस्ट मैच की संख्या) के आधार पर समिति की अध्यक्षता करेंगे। बाएं हाथ के पूर्व स्पिनर ओझा ने अपने पांच साल लंबे अंतरराष्ट्रीय करियर में 24 टेस्ट खेले थे। बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया ने विज्ञप्ति में कहा, पूर्व भारतीय बल्लेबाज अशोक मल्होत्रा और जतिन परांजपे की सदस्यता वाली क्रिकेट सलाहकार समिति (सीसी) ने सर्वसम्मति से पवार की नियुक्ति की सिफारिश की। अपने क्रिकेट करियर के दौरान 48 वर्षीय पवार ने भारत के लिए दो टेस्ट और 31 वनडे अंतरराष्ट्रीय मैच खेले। इसके बाद उन्होंने कोचिंग के क्षेत्र में भी कई जिम्मेदारियां निभाईं। वह भारतीय महिला टीम, मुंबई और गुजरात के मुख्य कोच रहे हैं। इसके अलावा वह यहां बीसीसीआई के उत्कृष्टता केंद्र में गेंदबाजी कोच के रूप में भी काम कर चुके हैं। भारतीय महिला टीम के साथ पवार के कार्यकाल के दौरान टीम ने 2022 में एशिया कप का खिताब जीता और राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक हासिल किया। पवार का अंतरराष्ट्रीय करियर भले ही छोटा रहा



लेकिन वह मुंबई के प्रमुख खिलाड़ियों में शामिल रहे। उन्होंने 148 प्रथम श्रेणी मैच में 470 विकेट लिए। वह निचले क्रम के उपयोगी बल्लेबाज भी रहे और उन्होंने सात शतक तथा 17 अर्धशतकों की मदद से 4,245 रन बनाए। पीटीआई को मिली जानकारी के अनुसार नए सिलेक्टर के लिए चयन प्रक्रिया 15 अक्टूबर को मुंबई स्थित बीसीसीआई मुख्यालय में हुई थी। पवार के अलावा पूर्व भारतीय क्रिकेटर सलिल अंकोला, वसीम जाफर, जैकब मार्टिन और कोनोर विलियम्स भी इंटरव्यू में शामिल हुए थे। हालांकि, सीएसई के सदस्यों ने चयन समिति के नेतृत्व में निरंतरता बनाए रखने के लिए पवार के नाम पर मुहर लगाई। यह व्यवस्था कम से कम 2027 में दक्षिण अफ्रीका में होने वाले 50 ओवर के वर्ल्ड कप को देखते हुए की गई है। जाफर ने 2000 से 2008 के बीच भारत के लिए 31 टेस्ट खेले थे। उन्होंने 34 के औसत से 1,944 रन बनाए जिसमें पांच शतक शामिल

प्रज्ञान ओझा बने टीम इंडिया के चीफ सिलेक्टर, रमेश पवार की कमेटी में एंट्री, बीसीसीआई ने किया ऐलान

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने सोमवार को बड़ी घोषणा की है। पूर्व स्पिनर प्रज्ञान ओझा टीम इंडिया के नए चीफ सिलेक्टर बन गए हैं। वह अजीत अगरकर की जगह यह जिम्मेदारी संभालेंगी। अगकर का कार्यकाल चार अक्टूबर को समाप्त हुआ था, जिसके बाद से 40 वर्षीय ओझा अंतरिम प्रमुख थे। बीसीसीआई ने पश्चिम क्षेत्र से रमेश पवार को पुरुष चयन समिति में शामिल किया है। ओझा वरिष्ठता (टेस्ट मैच की संख्या) के आधार पर समिति के चेयरमैन बने हैं। उन्होंने भारत के लिए 24 टेस्ट, 18 वनडे और दो टी20 इंटरनेशनल खेले। वह जून 2008 से नवंबर 2013 तक इंटरनेशनल क्रिकेट में एक्टिव थे। बीसीसीआई ने एक बयान में कहा, क्रिकेट एडवाइजरी कमिटी (सीएससी), जिसमें अशोक मल्होत्रा और जतिन परांजपे शामिल थे, ने पुरुष समिति के सदस्य की नियुक्त के लिए सिलेक्शन प्रोसेस को फॉलो किया।

सीएससी ने आवेदनों की जांच और इंटरव्यू के लिए बीसीसीआई हेडक्वार्टर में मीटिंग की और फिर सर्वसम्मति से पवार के नियुक्ति की सिफारिश की। रिपोर्ट्स के मुताबिक, सीएससी ने पूर्व ओपनर वसीम जाफर सहित चार या पांच उम्मीदवारों का इंटरव्यू लिया था। जाफर ने भारत की ओर से 31 टेस्ट और दो मैच खेले। वहीं, पवार ने अपने इंटरनेशनल करियर के दौरान दो टेस्ट और 31 वनडे में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वह कोचिंग की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। 48 वर्षीय पवार भारतीय महिला टीम, मुंबई और गुजरात के हेड कोच रहे। उन्होंने बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में बॉलिंग कोच के तौर पर काम किया। उन्होंने भारतीय महिला टीम को एशिया कप ट्रॉफी और कॉमनवेल्थ गेम्स में सिल्वर मेडल दिलाया। पांच सदस्यों की समिति में ओझा, पवार के अलावा शिव सुंदर दास, आरपी सिंह, अजय रात्रा हैं।

तेम्बा बावुमा ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शतक जड़कर रचा इतिहास, ऐसा करने वाले पहले एसए कैप्टन बने

नई दिल्ली। मौजूदा समय में ऑस्ट्रेलिया की टीम साउथ अफ्रीका के दौरे पर है, जहां उसे तीन वनडे और तीन टेस्ट मैचों की सीरीज खेलनी है। वनडे मैचों की सीरीज समाप्त हो चुकी है, जिसे साउथ अफ्रीका ने 2-1 से अपने नाम किया है। एक टेस्ट मैच भी खेला जा चुका है, जिसे ऑस्ट्रेलिया ने 214 रनों से जीता था। अब दूसरा टेस्ट मैच सेंट जॉर्ज पार्क गेबेरहा में खेला जा रहा है, जिसका आज मंगलवार, 20 अक्टूबर को तीसरा दिन है। बारिश के कारण पहले दो दिनों तक खेल बाधित रहने के बाद इस मुकाबले में साउथ अफ्रीका की टीम अच्छी स्थिति में नजर आ रही है। कप्तान तेम्बा बावुमा ने शतकीय पारी खेली है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में उन्होंने अपना पहला शतक लगाया है। साथ ही बावुमा का यह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कुल 5वां और बतौर कप्तान चौथा शतक है। इसी



के साथ बावुमा ने एक खास रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। वे गेबेरहा में एक शतक लगाने वाले पहले दक्षिण अफ्रीकी कप्तान बन गए हैं। इससे पहले साल 1992 में केपलर वेसेल्स ने भारत के खिलाफ नाबाद 95 रन बनाए थे। हालांकि, वे शतक नहीं बना सके थे, लेकिन बावुमा ने शतक जड़कर इतिहास रच दिया है और स्वर्णिम अक्षरों में

अपना नाम दर्ज करा लिया है। बावुमा ने साउथ अफ्रीका की लड़खड़ाती हुई पारी को संभाला है और एक छोर पर अड़े रहे हैं। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि साउथ अफ्रीका का पहला विकेट 12 के स्कोर पर गिरा। दूसरा बल्लेबाज भी 12 के स्कोर पर आउट हुआ। तीसरा 25 रनों के योग पर पवेलियन लौटा। चौथा बल्लेबाज 40 रन

के स्कोर पर आउट हुआ। पांचवां 92 और 6वां 110 रन पर पवेलियन लौटा। इन बल्लेबाजों से छोटी- छोटी साझेदारियां करने के बाद बावुमा ने 7वें विकेट के लिए मार्को यान्सेन के साथ 132 रनों की साझेदारी की और टीम का स्कोर 242 पर पहुंचा दिया। उस स्कोर के बाद यान्सेन के आउट होने के कारण बल्लेबाजी करने आए साइमन हारमन ने भी बावुमा का अच्छे साथ दिया और फिलहाल खेल के तीसरे दिन के दूसरे सत्र तक साउथ अफ्रीका की टीम 288 रन बना चुकी है। तेम्बा और साइमन के बीच 46 रनों की साझेदारी हो चुकी है। कप्तान बावुमा 241 गेंदों का सामना करते हुए 112 रन बनाकर खेल रहे हैं। उन्होंने अपनी पारी के दौरान कुल 12 चौके और 1 छक्का जड़ा है। मुकाबले में साइमन हारमर 17 रन बनाकर खेल रहे हैं। मार्को यान्सेन 87 रन बनाकर पवेलियन लौटे।